Visit us: krishichaupal.com

कृषि चौपाल

दिल्ली ● वर्ष : 16 ● अंक : 01 ● हिंदी मासिक ● अप्रैल 2023 ● मूल्य बीस रुपये

बजट 2023

कृषि के संपूर्ण विकास का लक्ष्य

ई-नाम से किसानों को कहीं भी उपज बेचने का अधिकार

महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण

पीएम विश्वकर्मा कौशल सम्मान योजना : हुनर को मिली नई पहचान

मुरैना की गजक और रीवा के सुंदरजा आम को मिलेगी अंतर्राष्ट्रीय पहचान

Azadi Ka Amrit Mahotsav

G20 भारत 2023 INDIA वसुधैव कुटुम्बकम् ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

पी एफ सी PFC

(A Maharatna Company)

POWERING
A GREENER FUTURE

As an organization fully aligned with the vision for
de-carbonization of the energy sector,
PFC is playing a pivotal role in powering the nation's aspirational
journey into a greener and more sustainable future.

STRENGTHS TO DRIVE ENERGY TRANSITION

- **Largest Lender to Renewable/Green Energy in the country**
- **Renewable Energy Loan Book CAGR of 32% in Last 5 years**
- **20,000+ MW Renewable Energy Capacity Supported**
- **Largest Lender in Indian Power Sector**

A Company Eligible to issue 54 EC Capital Gain Tax Exempt Bonds

कृषि चौपाल

वर्ष : 16, अंक : 01

अप्रैल 2023

RNI Regd. No. DELHIN/2007/20953

मार्गदर्शक

गणि राजेन्द्र विजय जी महाराज

महंत श्याम सुंदर जी महाराज

सलाहकार संपादक

ललित गर्ग

संपादक

महेन्द्र सिंह बोरा

प्रबंध संपादक

महेश नौटियाल

विशेष संवाददाता

नीरज जोशी

प्रचार-प्रसार

दलीप जीना

संपादकीय कार्यालय

कृषि चौपाल

सी-355, तृतीय तल, गली नं. 9

वेस्ट विनोद नगर, दिल्ली-110092

फोन नं. : 9910406059

ह्वाट्सएप नं. : 9354840377

ईमेल : krishichaupal@gmail.com

वेबसाइट : krishichaupal.com

मुद्रक, प्रकाशक और स्वामी महेन्द्र सिंह बोरा के लिए श्री इंटरप्राइजेज, डी-93, सैक्टर-7, नौएडा, जनपद गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित, तथा सी-355, तृतीय तल, गली नंबर-9, वेस्ट विनोद नगर, दिल्ली-110092 से प्रकाशित।

संपादक : महेन्द्र सिंह बोरा

नोटः उपरोक्त सभी पद अवैतनिक हैं।

प्राकृतिक कृषि क्रांति के लिए काम करना ही होगा

आजकल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी प्राकृतिक खेती अपनाने पर जोर दे रहे हैं। मोटे अनाजों (मिलेट्स) को प्रोत्साहित करने की बात कर रहे हैं। जब मोटे अनाज उगाने की बात की जाती है तो एक तरह से प्राकृतिक खेती को ही बढ़ावा देने की बात होती है।

प्राकृतिक कृषि खेती-किसानी की बहुत प्राचीन पद्धति है। कृषि की इस पद्धति को ऋषि खेती कहते हैं। इसे कुदरती खेती भी कहा जाता है। नाम से ही स्पष्ट हो जाता है कि खेतीबाड़ी की इस प्रक्रिया में किसी बाहरी तामझाम की जरूरत नहीं पड़ती। धरती की कोख में सिर्फ बीज डालना होता है। अन्य चीजों का उपयोग नहीं किया जाता है। बीज का अंकुरित होना, पौध बनना और उस पर फल-फूल लगना, ये सब काम प्रकृति यानी कुदरत के हिसाब से चलता है। इस प्रक्रिया में जरा भी छेड़छाड़ नहीं की जाती। अच्छी फसल लेने के लिए गोबर की खाद का प्रयोग किया जा सकता है। फसल पकने पर उसे एकत्रित कर लिया जाता है और फसल अवशेष उसी मिट्टी में मिल जाते हैं। वे सड़-गलकर फसल की अगली पीढ़ी के लिए खाद का काम करते हैं। यह प्रक्रिया सनातन चलती रहती है। एक पारिस्थितिक तंत्र विकसित कर लेती है। इसीलिए इसे सनातन कृषि भी कहते हैं। इस खेती में समस्त जीव-जगत और अखिल ब्रह्मांड के पालन का विचार है। यह पूरी तरह अहिंसक खेती है। पर्यावरण के अनुकूल है। इससे मिट्टी, पानी और वायु का संरक्षण एवं पोषण होता है। यह भूमि के प्राकृतिक स्वरूप को जीवंत बनाये रखती है। 'कृषि मूलम् जगत् सर्वम्' का जयघोष यहीं से निकला है।

प्राकृतिक खेती को अपनाने पर सारे फायदे ही फायदे हैं। इसमें खेती-किसानी पर लगने वाला खर्चा नहीं के बराबर है। किसान को शारीरिक श्रम भी बहुत कम करना होता है। अपने बचे हुए श्रम और समय का उपयोग वह पशुपालन पर कर सकता है। पशुओं से प्राप्त दूध एवं मांस से नकद कमाई कर सकता है और गोबर एवं गोमूत्र का उपयोग खेती में कर सकता है। जब खेती में खर्चा न्यूनतम होगा तो जो बचेगा वह सब कमाई होगी। तब खेती-किसानी कहीं से भी घाटे का सौदा नहीं रहेगी। तब किसान खुशहाल होगा। और तब किसान आत्महत्या जैसा कदम भी नहीं उठाएगा। इसके उलट आज स्थिति यह है कि छोटा-मोटा किसान मजबूरी में खेती में इतना इनपुट झौंक देता है कि कई बार उसके बराबर का भी आउटपुट उसे नहीं मिल पाता। इसलिए वह घाटे में चला जाता है। कुल मिलाकर भारी मात्रा में लगा इनपुट खेती को अलाभकारी और जोखिम का धंधा बना देता है। प्राकृतिक खेती कृषि के इस अलाभकारी और जोखिमभरा पेशा होने के कलंक को हमेशा के लिए मिटा सकती है। कृषि का पूरे का पूरा समीकरण बदल सकती है। किसान के मुरझाये चेहरे पर मुस्कान ला सकती है।

सवाल उठता है कि क्या भारत जैसे देश में यह सब संभव है?

यह बात सही है कि यदि ठान लिया जाए तो सब कुछ संभव है, बशर्ते सरकार को उसके लिए उतने ही ठोस उपाय भी करने होंगे। सिर्फ ऊपरी स्तर पर हवा बनाने से काम नहीं चलेगा बल्कि वास्तविक धरातल पर काम करना होगा। चूंकि यहां खेती-किसानी की दशा और दिशा दोनों को बदलने का प्रश्न है, इसलिए प्राथमिक स्तर पर कम से कम ये तीन जिम्मेदारियां तो सरकार को उठानी ही होंगी- 1) प्राकृतिक खेती से जो पैदावार प्राप्त होगी, सरकार उसके लिए उचित बाजार की व्यवस्था करे। 2) प्राकृतिक खेती से किसानों को जो नुकसान होगा, सरकार कम से कम तीन साल तक उसकी भरपाई करे। तथा, 3) आईसीएआर और तमाम कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों को हरित क्रांति की तरह प्राकृतिक कृषि क्रांति के काम पर लगा दिया जाए।

निश्चित तौर पर इसका सुखद परिणाम निकलेगा।

महेन्द्र सिंह बोरा
संपादक

ठोस कृषि नीति की जरूरत?

महाराष्ट्र और पूरे भारत में बढ़ता कृषि घाटा किसानों की सबसे बड़ी समस्या है। इसके बाद बाढ़ और सूखा जैसी प्राकृतिक आपदाएं इस समस्या को और बढ़ाती हैं। जिसकी वजह से किसानों को उनकी मेहनत का परिणाम नहीं मिल पाता है और किसान कर्ज के बोझ तले दब जाता है। कृषि लागत तक निकालना उनके लिए मुश्किल हो जाता है। बैंक से कर्ज लेने के बाद फसल का अच्छा उत्पादन न होने पर किसान कर्ज में डूब जाता है और आत्महत्या करने पर विवश होता है। सरकारों को किसानों के कर्ज के मसले पर एक ठोस नीति बनानी चाहिए। चुनावी योजनाओं का लालीपॉप उन्हें देने के बजाय जमीनी स्तर पर कृषि के ढांचागत विकास के लिए काम करना चाहिए।

प्रभुनाथ शुक्ल

भारत में कृषि सुधार एक अंतहीन बहस का मुद्दा रहा है। स्वतंत्र भारत में लघु और सीमांत किसानों की हालत आज भी जस की तस है। सरकार किसानों की आय दोगुना करने की बात करती है, लेकिन जमीनी स्तर पर ऐसा कुछ नहीं दिखता, जिसका कारण है कि देश का पेट भरने वाला किसान खुद भूखा, नंगा और फटेहाल है। महाराष्ट्र का उदाहरण सामने है।

आजादी के बाद श्वेत और हरितक्रांति के नारे बुलंद किए गए, लेकिन जमीनी स्तर पर उसका लाभ किसानों को नहीं मिला। सरकार की नीतियों की वजह से किसान आत्महत्या करने को मजबूर हुआ। बैंकों के कर्ज तले उसकी पीढ़ियां दबती चली गयीं। किसानों की समस्याओं को लेकर एक स्वतंत्र आयोग का गठन नहीं किया जा सका जो किसानों की समस्याओं की निगरानी रखता।

आधुनिक विकास में लघु और सीमांत किसानों के लिए कृषि लाभकारी साबित नहीं हो पायी। अगर ऐसा होता तो किसान आत्महत्या सरीखा कदम कभी नहीं उठाता। देश की जीडीपी में कृषि की हिस्सेदारी तकरीबन 20 फीसदी है। इसके बावजूद किसान की हालत किसी से छुपी नहीं है। महाराष्ट्र में 512 कुंतल प्याज बेचने के बाद किसान को सिर्फ दो रुपए का मुनाफा मिलता है। यह खेती और किसान साथ भद्दा मजाक नहीं तो और क्या है। सरकारों ने किसानों को सिर्फ लालीपॉप दिया, उनकी माली हालत सुधारने का प्रयास नहीं किया।

केंद्र की मोदी सरकार की तरफ से लाए गए विवादित कृषि कानून की वापसी तो हो गयी, लेकिन किसानों की उपज और मंडी के बीच आर्थिक संतुलन बढ़ाने और लागत घाटा कम करने की कोई ठोस नीति किसानों के लिए नहीं बन पायी। किसान बैंक और साहूकारों के कर्ज के बोझ तले डूबता गया। फसलों का लागत मूल्य तक नहीं निकल पा रहा। भारत का किसान दुनिया का पेट भर सकता है, लेकिन हमारी सरकारों के पास ऐसी नीति नहीं बन पायी कि उसकी माली हालत में सुधार हो। किसानों की उपज और उससे जुड़े रासायनिक उर्वरक कृषि, संयंत्र बेच कर लोग मालामाल हो गए लेकिन किसान जहां का तहां रह गया। किसान अपना धान और गेहूं 2200 रुपए प्रति कुंतल के समर्थन मूल्य पर बेचता है, फिर वही किसान उसी फसल का बीज कितना महंगा लेता है। उसका सारा लाभांश कौन हजम करता है। कृषि में लगातार लागत घाटा बढ़ रहा है। किसान पीएम योजना जैसी लॉलीपॉप सुविधाएं उसके लिए नाकाफी हैं।

देश के लघु, सीमांत और मध्यम किसानों के लिए कृषि में बेहतर सुधार की आवश्यकता है। किसानों की फसलों का उचित समर्थन मूल्य मिलना चाहिए। फसलों के तैयार होने के बाद तत्काल उन्हें बाजार उपलब्ध कराना चाहिए। सस्ते दर पर कृषि संयंत्रों की उपलब्धता होनी चाहिए। सिंचाई के लिए बिजली, नहर, ट्यूबवेल, तालाब और बॉवड़ी की जरूरत है। सूखा प्रभावित राज्यों में इसके लिए विशेष वित्त की जरूरत है। इसके साथ रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, खाद-बीज पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

केंद्र और राज्य सरकार अक्सर धान-गेहूं जैसे उत्पादन के अलावा बेहद कम फसलों की

समर्थन मूल्य पर खरीद करती है जबकि किसान गन्ना, कपास, ज्वार, बाजरा, तिलहन, दलहन, मोटे अनाजों की खेती करता है। उस हालात में उसे उचित बाजार नहीं मिल पाता है। जिन राज्यों में सरकारी सुविधाएं उपलब्ध हैं वहां सरकारी खरीद की नीतियां और अफसरशाही के बर्ताव से किसान परेशान हो जाता है जिसकी वजह से किसान कम दामों में बिचैलियों को अपनी फसल बेचने को मजबूर हो जाता है।

महाराष्ट्र में नासिक और पुणे जैसे जिले प्याज उत्पादन को लेकर बेहद अग्रणी हैं। देश की खपत का 42 फीसदी उत्पादन महाराष्ट्र में होता है। लासलगांव एशिया की सबसे बड़ी प्याज मंडी है। बारिश और दूसरे प्राकृतिक प्रकोप की वजह से किसानों को नुकसान उठाना पड़ता है। जबकि यही प्याज बाजारों में 15 से 20 रुपये किलो बिक रहा है। केंद्र सरकार को ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित करनी चाहिए कि उत्पादन के बाद किसानों की फसल का हर स्तर पर उचित मूल्य मिलना चाहिए। किसान के साथ दो रुपए वाला भद्दा मजाक नहीं होना चाहिए। लागत मूल्य से किसान को दो गुना फायदा होना चाहिए लेकिन महाराष्ट्र और देश के अन्य हिस्सों में किसान उपज के लिए बाजार भाव उपलब्ध न होने पर अपनी खड़ी फसल को नष्ट कर देता है। लॉकडाउन में यह स्थिति आम देखी गयी। बाजार न मिलने पर यही हालात देखने को मिलते हैं।

महाराष्ट्र की शिंदे और फडणवीस सरकार किसानों को लेकर अपने बजट को ऐतिहासिक बता रही है जबकि पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने इसे हलवा बताया है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार अभी तक तूफान से प्रभावित किसानों को मुआवजा नहीं मिल पाया है। राज्य में प्याज की अच्छी कीमत न मिलने पर किसान अपनी फसल की जुताई करने को मजबूर हैं। महाराष्ट्र सरकार ने भी पीएम किसान की तर्ज पर यहां किसानों को 6000 देने का फैसला किया है और कई लाभकारी योजनाओं की घोषणा की है, लेकिन किसानों को कितना लाभ होगा यह भविष्य बताएगा। कृषि लागत को देखते हुए यह नाकाफी है। हालांकि कई घोषणाएं अच्छी हैं लेकिन परिणाम जब अच्छे हों तब।

महाराष्ट्र सरकार ने एक रुपए में फसल बीमा उपलब्ध कराने का वादा किया है लेकिन जमीनी बात यह है कि फसल बीमा की नीतियां ही कारगर नहीं हैं। उसका अच्छा लाभ किसानों को नहीं मिल पाता है यह सरकारें भी अच्छी तरह जानती हैं। बीमा कंपनियों का नियम इतना उलझा है कि किसान खुद उलझ जाता है। प्राकृतिक आपदा में सामूहिक स्तर पर किसानों का नुकसान होने पर ही फसलों का आकलन होता है। जबकि किसान व्यक्तिगत रूप से भी प्रभावित होता है। आपदा के बाद किसानों को जो भी मदद मिलती है वह भी सवाल खड़े करती है।

महाराष्ट्र में एक आंकड़े के अनुसार 2.10 करोड़ हेक्टेयर पर कृषि की जाती है। कृषि और उससे जुड़े संबंधित गतिविधियों में यहां 65 फीसदी श्रमिक काम करते हैं। महाराष्ट्र भारत का सर्वाधिक प्याज उत्पादक राज्य है। यहां धान, ज्वार, बाजरा, कपास, गन्ना, गेहूं, दलहन और तिलहन फसलों का उत्पादन किया जाता है। इसमें मूंगफली, सूरजमुखी सोयाबीन, जैसी फसलें आती हैं। सिंचाई की सुविधाओं में नहर, डैम, बावड़ी जैसी सुविधाएं उपलब्ध हैं। विदर्भ जैसा इलाका सूखे से प्रभावित रहता है।

महाराष्ट्र और देश में किसानों की आत्महत्या को लेकर भी सवाल खड़े होते हैं। सरकारें किसी की हों लेकिन आत्महत्याएं नहीं थमती हैं। राज्य में किसानों की आत्महत्या रुकने का नाम नहीं लेती। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार साल 2022 में 1023 जबकि 2021 में 887 किसानों ने आत्महत्या किया। किसानों की आत्महत्या सरकारों के लिए बड़ी चुनौती है। इसकी मुख्य वजह किसानों की उपज का उचित लाभ बिचौलिये और ऊपर वाले कमाते हैं।

महाराष्ट्र और पूरे भारत में बढ़ता कृषि घाटा किसानों की सबसे बड़ी समस्या है। इसके बाद बाढ़ और सूखा जैसी प्राकृतिक आपदाएं इस समस्या को और बढ़ाती हैं। जिसकी वजह से किसानों को उनकी मेहनत का परिणाम नहीं मिल पाता है और किसान कर्ज के बोझ तले दब जाता है। कृषि लागत तक निकालना उनके लिए मुश्किल हो जाता है। बैंक से कर्ज लेने के बाद फसल का अच्छा उत्पादन न होने पर किसान कर्ज में डूब जाता है और आत्महत्या करने पर विवश होता है। सरकारों को किसानों के कर्ज के मसले पर एक ठोस नीति बनानी चाहिए। चुनावी योजनाओं का लालीपॉप उन्हें देने के बजाय जमीनी स्तर पर कृषि के ढांचागत विकास के लिए काम करना चाहिए। (हिफी)

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने जीता बैस्ट सेंटर अवार्ड

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की अखिल भारतीय समन्वित मक्का पर शोध परियोजना की तीन-दिवसीय 66वीं वार्षिक कार्यशाला के समापन अवसर पर कुल 58 संस्थान एवं विश्वविद्यालय तथा 20 निजी कृषि कंपनियों में से भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली को वर्ष 2022-23 का मक्का के क्षेत्र में उत्कृष्ट शोध करने हेतु बैस्ट सेंटर अवार्ड से नवाजा गया। वहीं बैस्ट पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप की श्रेणी में बहुराष्ट्रीय कंपनी कटेवा एग्री साइंसेस को बैस्ट पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप अवार्ड दिया गया।

इससे पूर्व कार्यशाला के तृतीय दिवस को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उप महानिदेशक डा. टी.आर. शर्मा की अध्यक्षता में वराइटल रिलिज कमेटी की बैठक की गयी, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों हेतु मक्का की 30 नयी प्रजातियों का अनुमोदन किया गया। कार्यशाला के समापन सत्र में मक्का के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले वैज्ञानिकों को भी सम्मानित किया गया, जिसमें मरणोपरान्त बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. जे.पी. साही, महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर से डॉ. श्याम सुन्दर शर्मा, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के डॉ. एम.सी. कम्बोज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के डॉ. रविन्द्र एन गडग थे।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि अंतर्राष्ट्रीय संस्थान इक्रिसैट हैदराबाद के निदेशक डॉ. एम.एस. जाट ने कहा कि मक्का अनुसंधान, प्रसार, विकास, विपणन एवं मूल्यसंवर्धन के क्षेत्र में कार्य कर रहे अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संस्थानों को समन्वय के साथ कार्य करना होगा तथा सभी संस्थानों को मिलकर लक्ष्य निर्धारित करने होंगे।

समापन समारोह की अध्यक्षता कर रहे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डॉ. एस.के. प्रधान ने कहा कि यह तीन-दिवसीय कार्यशाला बहुत ही सफल रही। इसमें विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा दिये गये प्रस्तुतिकरण एवं संस्तुतियों का संकलन कर देश के विभिन्न संस्थानों को भेजा जायेगा, जिससे मक्का अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में और गति मिल सकेगी।

कृषि के संपूर्ण विकास का लक्ष्य

पिछले करीब 9 वर्षों की तरह, इस बार भी बजट में कृषि को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। पिछले कुछ वर्षों से हर बजट को गांव, गरीब और किसान वाला बजट कहा गया है। आजादी के बाद लंबे समय तक कृषि क्षेत्र अभाव के दबाव में रहा और भारत खाद्य सुरक्षा के लिए दुनिया पर निर्भर था। आज भारत न केवल आत्मनिर्भर बना है बल्कि दुनिया में भी निर्यात कर रहा है। बात चाहे आत्मनिर्भरता की हो या निर्यात की, हमारा लक्ष्य सिर्फ चावल, गेहूं तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। वर्ष 2021-22 में दलहन, मूल्य वर्धित खाद्य उत्पाद और खाद्य तेलों के आयात पर ही करीब 2 लाख करोड़ रुपये खर्च हो गए, मतलब इतना पैसा देश के बाहर चला गया। अगर देश इन कृषि उत्पादों के क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर बन जाए तो ये पैसा हमारे किसानों के पास पहुंच सकता है। पिछले कुछ वर्षों से लगातार बजट में इन क्षेत्रों को आगे बढ़ाने वाले फैसले किए जा रहे हैं।

बजट प्रावधान

- 20 लाख करोड़ रुपये तक बढ़ाया जाएगा किसान ऋण।
- 60,000 करोड़ रुपये पीएम किसान निधि के लिए रखे गए।
- कृषि क्षेत्र में ओपन सोर्स बेस्ड प्लेटफॉर्म को बढ़ावा देना।
- एग्री-टेक स्टार्टअप के लिए एक्सेलेरेटर फंड की व्यवस्था।
- मैन्युक्रिंग करने वाली नई सहकारी समितियों को कम टैक्स रेट का फायदा मिलेगा।
- सहकारी समितियों की 3 करोड़ रुपये तक की निकासी पर टीडीएस खत्म।
- शुगर कोऑपरेटिव द्वारा 2016-17 के पहले के बकाये के किए गए भुगतान पर टैक्स छूट। इससे शुगर कोऑपरेटिव को 10 हजार करोड़ का फायदा।
- पीएम मत्स्य संपदा योजना के तहत 6 हजार करोड़ रुपये की लागत से एक नए सब-कंपोनेंट की घोषणा।
- भारत को श्रीअन्न का वैश्विक केंद्र बनाने के उद्देश्य से भारतीय बाजरा अनुसंधान संस्थान हैदराबाद को उत्कृष्टता केंद्र के रूप में बढ़ावा दिया जाएगा।

कृषि बजट

- रुपये 25,000 करोड़ - 2014
- रुपये1,25,000 करोड़ - 2023

उपलब्धियां जो बनी आधार

- एमएसपी में बढ़ोतरी की, दलहन उत्पादन को बढ़ावा दिया, फूड प्रोसेसिंग करने वाले फूड पार्कों की संख्या बढ़ाई गई।
- 9 वर्ष पहले देश में एग्री स्टार्टअप नहीं के बराबर थे लेकिन अब 3000 से भी ज्यादा हैं।
- पिछले करीब 9 वर्षों में देश में मत्स्य उत्पादन करीब 70 लाख मीट्रिक टन बढ़ा है। 2014

के पहले, इतना ही उत्पादन बढ़ने में करीब 30 साल लग गए थे।

- मोटे अनाज को अब देश ने इस बजट में ही श्रीअन्न की पहचान दी है।

एक साल में पूरे होंगे ये लक्ष्य

- 1,31,100 करोड़ रुपये यूरिया की सब्सिडी, यूरिया उत्पादन बढ़ाने और 20% यूरिया आयात घटाने पर होंगे खर्च।
- 7 करोड़ किसान और 4.35 करोड़ हेक्टेयर भूमि फसल बीमा योजना के दायरे में लाने का लक्ष्य।
- 2,400 किसान उत्पादक संगठन बनेंगे, 4.80 लाख किसान होंगे इसमें कवर।

अमल की यात्रा...

- सरकार ने डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को ओपन सोर्स प्लेटफॉर्म के तौर पर सामने रखा है जो यूपीआई की तरह ही है। जैसे यूपीआई ट्रांजैक्शन बढ़ रहा है उसी तरह एग्री-टेक डोमेन में भी निवेश और इनोवेशन की अपार संभावनाएं बन रही हैं।
- ओपन सोर्स प्लेटफॉर्म से लॉजिस्टिक्स बेहतर हो सकता है और बड़े बाजार तक पहुंच आसान हो सकती है।
- टेक्नोलॉजी के जरिए ड्रिप सिंचाई को बढ़ावा देने का, साथ ही सही सलाह, सही व्यक्ति तक समय से पहुंचेगा।
- युवा अपने इनोवेशन से सरकार और किसान के बीच सूचना के सेतु बनेंगे।
- फसल के बारे में अनुमान लगाने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल कर सकते हैं। नीति निर्माण में भी मदद कर सकते हैं, कौन सी फसल ज्यादा मुनाफा दे सकती यह भी बता सकते हैं।
- मौसम के बदलावों की रीयल टाइम सूचना भी उपलब्ध करा सकते हैं।
- भारत की पहल पर 2023 को अंतरराष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष घोषित किया गया है। भारत ने इसे श्रीअन्न नाम दिया है। इससे मिलेट्स को अंतरराष्ट्रीय पहचान और वैश्विक बाजार उपलब्ध होगा।
- भारत के सहकारिता सेक्टर में एक नई क्रांति हो रही है। अभी तक ये देश के कुछ राज्यों और कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रहा है लेकिन अब इसका विस्तार पूरे देश में किया जा रहा है।
- जिन क्षेत्रों में सहकारी संस्थाएं पहले से नहीं हैं, वहां डेयरी और फिशरीज से जुड़ी सहकारी संस्थाओं से छोटे किसानों को बहुत लाभ होगा।
- पीएम मत्स्य संपदा योजना के तहत घोषित नए सब-कंपोनेंट से मछुआरों और छोटे उद्यमियों के लिए बनेंगे नए अवसर और मत्स्य मूल्य शृंखला के साथ बाजार को बढ़ावा मिलेगा।
- प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने और केमिकल आधारित खेती को कम करने की दिशा में भी तेजी से काम होगा।

ई-नाम से किसानों को कहीं भी उपज बेचने का अधिकार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाली सरकार किसानों के हितों के लिए लगातार और तेजी से काम कर रही है। राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई- नाम) इसी दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। किसानों को लाभ पहुंचाने और उनके उत्पाद बेचने के तरीके को बदलने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 14 अप्रैल 2016 को 8 राज्यों की 21 मंडियों के साथ ई-नाम योजना की शुरूआत की थी। इस पहल से जहां पारदर्शिता आई वहीं किसान काफी हद तक लाभान्वित भी हुए हैं। यह योजना कृषि समुदाय के लिए बड़ा बदलाव है और इससे भारत में पहली बार एक राष्ट्र-एक बाजार की अवधारणा विकसित हो रही है। डॉक्टर भीमराव आंबेडकर ने अपना जीवन गरीबों, अत्यंत पिछड़े वर्गों और किसानों को समर्पित कर दिया था, यही वजह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय कृषि बाजार को बाबा साहेब की 125वीं जयंती के अवसर पर किसानों के लिए खोलने का फैसला किया।

- ई-नाम किसानों को बेहतर मूल्य दिलाने में मददगार, संचालन में आसानी, पारदर्शिता और डिजिटलीकरण के माध्यम से नागरिकों को सशक्त बना रहा है।
- किसान ई-नाम पोर्टल पर पंजीकरण करने के लिए स्वतंत्र। वजन तौलने में पारदर्शिता के लिए इलेक्ट्रानिक तराजू का उपयोग और भीम भुगतान सुविधा का उपयोग किया जा सकता है।
- किसान, ई-नाम मंडियों में ऑनलाइन बिक्री के लिए अपनी उपज अपलोड कर सकते हैं। व्यापारी भी किसी भी स्थान से ई-नाम के अंतर्गत खरीद के लिए बोली लगा सकते हैं।

- **ई-नाम पर पंजीकृत किसानों की संख्या - 1,74,89,327**
- **पंजीकृत व्यापारी - 2,40,500**
- **22 राज्य और 3 केंद्र शासित प्रदेशों में कुल ई-नाम मंडी -1260**
- **एफपीओ - 2,433**

(आंकड़ा 3 मार्च 2023 तक)

महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण

स्वास्थ्य क्षेत्र हो या खेल का मैदान, व्यापार हो या राजनैतिक क्षेत्र, भारत में महिलाओं की न केवल भागीदारी बढ़ी है बल्कि हर क्षेत्र में नेतृत्व कर रही हैं। बीते 9 वर्षों में देश नारी सशक्तीकरण और नारी के नेतृत्व में विकास के विजन की ओर बढ़ चला है। अब जी-20 की अध्यक्षता कर रहे भारत ने दुनिया के एजेंडे में इसे शामिल किया है। इस वर्ष का आम बजट भी नारी के नेतृत्व में विकास को नई गति देना वाला है क्योंकि नारी शक्ति की संकल्प शक्ति, इच्छाशक्ति, कल्पना शक्ति, निर्णय शक्ति, त्वरित फैसले लेने का उनका सामर्थ्य निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उनकी तपस्या, उनके परिश्रम की पराकाष्ठा, यह मातृशक्ति की एक प्रतिबिंब हैं।

बजट प्रावधान

- महिला सम्मान बचत पत्र योजना में महिलाओं को 7.5% वार्षिक ब्याज दिया जाएगा।
- पीएम आवास योजना के लिए 79 हजार करोड़ रुपये रखे गए हैं। पीएम आवास योजना में घर आवंटन में मालिकाना हक महिलाओं को दिए जाने की प्राथमिकता है।
- महिलाओं के 81 लाख स्वयं सहायता समूहों को बड़े उत्पादक उद्यम बनाकर बृहत स्तर पर जोड़ा जाएगा।
- 1 करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है जिसमें कृषि से जुड़ी महिलाओं को भी ध्यान में रखा गया है।

उपलब्धियां जो बनी आधार

- भारत के सामाजिक जीवन में बहुत बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने जिस प्रकार महिला सशक्तीकरण के लिए काम किया है, आज उसके परिणाम नजर आने लगे हैं।
- भारत में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या बढ़ रही है।
- पिछले करीब 9 वर्षों में उच्च विद्यालय या उसके आगे की कक्षा में पढ़ाई करने वाली लड़कियों की संख्या तीन गुना बढ़ी है।
- भारत में विज्ञान-तकनीक, इंजीनियरिंग और गणित के क्षेत्रों में लड़कियों का पंजीकरण आज 43 प्रतिशत तक पहुंच चुका है जो समृद्ध और विकसित देश अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी के मुकाबले सबसे अधिक है।
- मुद्रा लोन के लाभार्थियों में करीब 70 प्रतिशत लाभार्थी देश की महिलाएं हैं।
- आज देश में पांच में से एक नॉन-फॉर्म बिजनेस महिलाएं संभाल रहीं हैं। बीते 9 वर्षों में सात करोड़ से ज्यादा महिलाएं स्व-सहायता समूह में शामिल होकर अलग-अलग क्षेत्रों में काम कर रहीं हैं।
- 9 वर्षों में इन स्व-सहायता समूह ने सवा 6 लाख करोड़ रुपये का लोन लिया है।
- भारत में बीते वर्षों में पीएम आवास योजना के जो 3 करोड़ से अधिक घर बने हैं उनमें से अधिकांश महिलाओं के ही नाम हैं।

अमल की यात्रा...

- देश की आधी आबादी के सामर्थ्य से हम देश को कैसे आगे ले जाएं। नारी शक्ति के सामर्थ्य को कैसे बढ़ाएं, इसका प्रतिबिंब इस बजट में भी नजर आता है, जिसे सबके सहयोग से आगे बढ़ाया जा रहा है।
- सहकारिता क्षेत्र में भी महिलाओं की बड़ी भूमिका रही है। आने वाले वर्षों में 2 लाख से ज्यादा मल्टी-पर्पस कोऑपरेटिव, डेयरी कोऑपरेटिव और फिशरीज कोऑपरेटिव बनाये जाने हैं।
- 1 करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें महिला किसानों और उत्पादक समूहों की बड़ी भूमिका हो सकती है। इसमें स्व-सहायता समूह की महिलाओं को अवसर मिलेगा।
- महिलाओं को जनजातीय क्षेत्रों में उगाए जाने वाले श्री अन्न का पारंपरिक अनुभव हैं। श्री अन्न की मार्केटिंग से लेकर इनसे बने प्रसंस्कृत भोजन से जुड़े अवसरों को बढ़ाना होगा।
- बालिकाओं के कौशल विकास में पीएम विश्वकर्मा योजना एक बड़े ब्रिज का काम करेगी।
- आजादी के बाद नागालैंड में पहली बार अभी कुछ दिन पहले ही दो महिलाएं विधायक बनी हैं। उनमें से एक को मंत्री भी बनाया गया है। महिलाओं का सम्मान और समानता का भाव बढ़ाकर ही भारत तेजी से आगे बढ़ सकता है।
- जब बेटियां सेना में जाकर देश की सुरक्षा करती दिखाई देती हैं, राफेल उड़ाती दिखती हैं तो उनसे जुड़ी सोच भी बदलती है। जब महिलाएं उद्यमी बनतीं हैं, फैसले लेती हैं, जोखिम लेती हैं तो उनसे जुड़ी सोच भी बदलती है।
- सभी हितधारक महिलाओं-बहनों-बेटियों के सामने आने वाली हर रुकावट को दूर करने के संकल्प के साथ आगे बढ़ें।

पीएम विश्वकर्मा कौशल सम्मान योजना

हुनर को मिली नई पहचान

छोटे कारीगर स्थानीय शिल्प के उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पीएम विश्वकर्मा योजना उन्हें सशक्त बनाने पर केंद्रित है। प्राचीन भारत में कुशल कारीगर अपने-अपने तरीके से योगदान देते थे लेकिन इस कुशल कार्यबल को लंबे समय तक उपेक्षित रखा गया और गुलामी के लंबे कालखंड में उनके काम को गैर-महत्वपूर्ण माना गया। कुशल कारीगर आत्मनिर्भर भारत की सच्ची भावना के प्रतीक हैं और अब मौजूदा केंद्र सरकार ऐसे लोगों को नए भारत का विश्वकर्मा मानती है। हमारे लोहार, स्वर्णकार, कुम्हार, बढ़ई, मूर्तिकार, कारीगर, राजमिस्त्री अनेकों हैं जो सदियों से अपनी विशिष्ट सेवाओं की वजह से समाज का अभिन्न हिस्सा रहे हैं।

बजट प्रावधान

पीएम विश्वकर्मा योजना, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 4.0 को उद्योग और बाजार में कुशल कार्यबल की क्षेत्रीय मांग के अनुसार उम्मीदवारों को कौशल प्रदान करने के लिए आगे बढ़ाया जाएगा।

उपलब्धियां जो बनी आधार

- 1.37 करोड़ उम्मीदवारों को वर्ष 2015 से 2022 तक प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना में किया गया प्रशिक्षित।
- 24.36 लाख प्रमाणित उम्मीदवारों को देशभर में जॉब मिलने की सूचना है।
- 11,880 करोड़ रुपये पीएमकेवीवाई में 2015 से दिसंबर 2022 तक आवंटित किए गए हैं।

अमल की यात्रा...

- पीएम विश्वकर्मा कौशल सम्मान योजना नई लेकिन महत्वपूर्ण है। इसका उद्देश्य समृद्ध परंपरा को संरक्षित और विकास करना है।
- इस वर्ग को अपने हाल पर नहीं छोड़ा जा सकता है। ये वो वर्ग है, जो सदियों से अपने पारंपरिक शिल्प को बचाए हुए है।
- शहर और गांव में ऐसे कारीगर हैं जो अपने हाथ के कौशल से औजार का उपयोग करते हुए जीवन यापन करते हैं। योजना का फोकस ऐसे ही बिखरे हुए समुदायों पर है।
- केंद्र सरकार, हर विश्वकर्मा साथी को होलिस्टिक इंस्टीट्यूशनल सपोर्ट प्रदान करेगी। विश्वकर्मा साथियों को आसानी से लोन मिले, उनका कौशल बढ़े, उन्हें हर तरह का टेक्निकल सपोर्ट मिले, ये सब सुनिश्चित किया जाएगा।
- डिजिटल सशक्तीकरण, ब्रांड प्रमोशन और उत्पादों के बाजार तक पहुंच बनाना और रॉ-मैटेरियल भी सुनिश्चित किया जाएगा।
- योजना में आज के विश्वकर्मा साथियों को कल का बड़ा उद्यमी बनाने के उद्देश्य के लिए उनके उप-बिजनेस मॉडल में स्थायित्व जरूरी है। उनके बनाए प्रोडक्ट को बेहतर बनाने, आकर्षक डिजाइनिंग, पैकेजिंग और ब्रांडिंग पर भी काम किया जा रहा है।
- स्टार्टअप, ई-कॉमर्स मॉडल से शिल्प उत्पादों के लिए बड़ा बाजार तैयार कर सकते हैं। स्थानीय के साथ ग्लोबल मार्केट को भी लक्षित किया जा रहा है।
- सबसे आग्रह है कि हम सब यह सोचें कि विश्वकर्मा साथियों के बीच कैसे जाएं और उनकी कल्पनाओं को कैसे पंख दें।
- उद्योग जगत इन लोगों को अपनी जरूरतों के साथ लिंक करके उत्पादन बढ़ा सकता है, उन्हें प्रशिक्षण दे सकता है।
- अधिकांश लोग ऐसे वर्गों से हैं जिनके लिए ऐसी रणनीति की जरूरत है कि उन्हें पीएम विश्वकर्मा योजना के बारे में बता सकें, लाभ पहुंचा सकें।

मोटा अनाज के अग्रणी उत्पादक देशों का मंत्रिस्तरीय गोलमेज सम्मेलन

नई दिल्ली में वैश्विक मोटा अनाज (श्री अन्न) सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के बाद मोटे अनाजों की मंत्रिस्तरीय गोलमेज बैठक आयोजित की गई। बैठक में गयाना, मॉरीशस, श्रीलंका, सूडान, सूरीनाम और जाम्बिया के मंत्रियों और गाम्बिया तथा मालदीव के कृषि सचिव और नाइजीरिया में मोटा अनाज पहल के महानिदेशक ने भाग लिया। भारत सरकार के केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने बैठक में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

भारत की पहल पर 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष के रूप में घोषित करने का संयुक्त राष्ट्र का उद्देश्य खाद्य सुरक्षा और पोषण के लिए श्री अन्न (मोटा अनाज) के बारे में जागरूकता बढ़ाना, मोटा अनाज के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास और विस्तार के लिए निवेश बढ़ाना और उत्पादन, उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार के लिए हितधारकों को प्रेरित करना है। मोटा अनाज के प्रमुख उत्पादक देशों को विश्व खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मोटा अनाज के उत्पादन को प्रोत्साहन देने में प्रमुख भूमिका निभानी है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इससे पहले दिन में केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर के अलावा केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल और मनसुख मंडाविया और केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री कैलाश चौधरी की उपस्थिति में इस वैश्विक कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अन्य देशों के अतिथि मंत्रियों ने उद्घाटन समारोह में शामिल होकर इसकी की शोभा बढ़ाई और अपने देशों के लिए संदेश दिए। उद्घाटन समारोह के दौरान, प्रधानमंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष 2023 पर एक स्मारक टिकट और सिक्के का अनावरण किया। उन्होंने डिजिटल रूप से मोटा अनाज (श्री अन्न) के मानकों के बारे में एक पुस्तक का भी अनावरण किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-आईसीएआर-भारतीय मोटा अनाज अनुसंधान संस्थान-आईआईएमआर को वैश्विक उत्कृष्टता केंद्र भी घोषित किया।

केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री श्री तोमर ने मंत्रिस्तरीय गोलमेज सम्मेलन में अपने उद्घाटन भाषण में दुनिया में मोटा अनाज का सबसे बड़ा उत्पादक और दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक होने के रूप में श्री अन्न को प्रोत्साहन देने में भारत की भूमिका पर प्रकाश डाला। पिछले 5 वर्षों के दौरान, भारत 13.71 से 18.02 मिलियन टन की सीमा में मोटा अनाज का उत्पादन कर रहा है। मोटा अनाज को बढ़ावा देने और मोटा अनाज की अतिरिक्त मांग को पूरा करने के लिए, कृषि और किसान कल्याण विभाग (डीए एंड एफडब्ल्यू) 14 राज्यों के 212 जिलों में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एनएफएसएम) के अंतर्गत वर्ष 2018-19 से पोषक-अनाज (मोटा अनाज) पर एक उप-अभियान लागू कर रहा है। भारत ने निर्यात वर्ष 2022-23 (अप्रैल से नवंबर) के दौरान 1,04,146 मीट्रिक टन मोटा अनाज का निर्यात किया है, जिसका मूल्य 365.85 करोड़ रुपये है। अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष के उत्सव के आयोजन के बाद मोटा अनाज के निर्यात में वृद्धि की संभावना है।

रणबीर बाग में जमे हुए वीर्य स्टेशन की आधारशिला

केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला ने जम्मू-कश्मीर के रणबीरबाग में जमे हुए वीर्य स्टेशन की आधारशिला रखी। राष्ट्रीय गोकुल मिशन योजना के अंतर्गत इस वीर्य स्टेशन को कुल 2,163.57 लाख रुपये की राशि के साथ स्वीकृति प्रदान की गई है। जमे हुए वीर्य स्टेशन कश्मीर प्रांत को कृत्रिम गभार्धान हेतु उपयोग किए जाने वाले उच्च गुणवत्ता और रोग मुक्त जर्मप्लाज्मा के उत्पादन में आत्मनिर्भर बनने में सक्षम करेगा।

जमे हुए वीर्य परियोजना रणबीर बाग की स्थापना वर्ष 1980 में इंडो-डेनिश परियोजना के अंतर्गत हुई थी। डेनिश सरकार और भारत सरकार के बीच एक सहायता कार्यक्रम दानिडा के अंतर्गत जमे हुए वीर्य प्रसंस्करण के उपकरण प्राप्त हुए थे। परियोजना को वर्ष 1982 में क्रायो-संरक्षित वीर्य को संसाधित करने के लिए शुरू किया गया। जमे हुए वीर्य परियोजना रणबीर बाग (पशुधन विकास बोर्ड-कश्मीर), मुख्य रूप से केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के कश्मीर प्रांत में मवेशियों के कृत्रिम गभार्धान में उपयोग की जाने वाली जमे हुए वीर्य खुराक के उत्पादन में लगी हुई है।

कमलम (ड्रैगन फ्रूट) की खेती का रकबा पांच वर्षों में 50,000 हेक्टेयर तक बढ़ने की आशा

व्यापक रूप से पिताया के रूप में जाना जाने वाला कमलम या ड्रैगन फ्रूट औषधीय गुणों से परिपूर्ण बेल की तरह से तेजी से बढ़ने वाली बारहमासी कैक्टस प्रजाति है, जिसका मूल उत्पादन दक्षिणी मैक्सिको, मध्य अमेरिका और दक्षिण अमेरिका में प्रारंभ हुआ। व्यापक रूप से दुनिया में दक्षिण-पूर्व एशिया, भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, कैरेबियन द्वीप समूह, ऑस्ट्रेलिया में उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में कमलम या ड्रैगन फ्रूट की खेती की जाती है। वर्तमान में इसकी खेती कम से कम 22 उष्णकटिबंधीय देशों में की जा रही है।

कमलम ने न केवल अपने लाल बैंगनी रंग और खाद्य उत्पादों के आर्थिक मूल्य के कारण बल्कि अपने जबरदस्त स्वास्थ्य लाभों के कारण हाल ही में दुनिया भर के उत्पादकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। भारत में कमलम फल की खेती तेजी से बढ़ रही है और कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, छत्तीसगढ़, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, मिजोरम और नागालैंड के किसानों ने इसकी खेती करना प्रारंभ कर चुके हैं। वर्तमान में, भारत में ड्रैगन फ्रूट की खेती का कुल क्षेत्रफल 3,000 हेक्टेयर से अधिक है जो घरेलू मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं है, इसलिए भारतीय बाजार में उपलब्ध ड्रैगन फ्रूट का अधिकांश हिस्सा थाईलैंड, मलेशिया, वियतनाम और श्रीलंका से आयात किया जाता है।

भारत में कमलम का आयात 2017 के दौरान 327 टन की मात्रा के साथ शुरू हुआ था, जो 2019 में तेजी से बढ़कर 9,162 टन हो गया है और 2020 और 2021 के लिए अनुमानित आयात क्रमशः लगभग 11,916 और 15,491 टन है। 2021 के लिए इसका अनुमानित आयात मूल्य लगभग 100 करोड़ रुपये था। ड्रैगन फ्रूट रोपण के बाद पहले वर्ष में आर्थिक उत्पादन के साथ तेजी से फिर से बढ़ता है और अगले 3-4 वर्षों में पुनः पूर्ण उत्पादन प्राप्त होता है। यह फसल लगभग 20 वर्ष तक उगाई जा सकती है। रोपण के 2 वर्षों के बाद औसत आर्थिक उपज 10 टन प्रति एकड़ है। वर्तमान में बाजार दर 100 रुपये प्रति किलो फल है, इसलिए प्रति वर्ष फल बेचने से उत्पन्न राजस्व 10,00,000 रुपये है और इसका लाभ लागत अनुपात (बीसीआर) 2.58 है।

आत्मनिर्भर भारत पर ध्यान देने के साथ, आयात को कम करने और उत्पादन के लिए अपनी क्षमता बढ़ाने की आवश्यकता है। मिशन फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ हॉर्टिकल्चर (एमआईडीएच) के तहत इस प्रयास में कमलम सहित विदेशी और विशिष्ट क्षेत्र के फलों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए चिन्हित संभावित क्षेत्र में इस फसल की खेती के लिए एक रोडमैप तैयार किया जा रहा है। कमलम के लिए एमआईडीएच के तहत पांच वर्षों में क्षेत्र विस्तार का लक्ष्य 50,000 हेक्टेयर है। इस फल की खेती हाल ही में शुरू की गई है और इस स्वास्थ्य से भरपूर इस फल की खेती आईसीएआर-सेंट्रल आइलैंड एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पोर्ट-ब्लेयर, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और आईआईएचआर, बेंगलुरु, कर्नाटक में की गई है।

एमआईडीएच के अंतर्गत, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने कमलम फल के उत्पादन, कटाई के बाद खेती और मूल्यवर्धन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु द्वारा हिरेहल्ली, बेंगलुरु, कर्नाटक में स्थापित किए जाने वाले उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) को स्वीकृति दे दी है।

यह केंद्र अंतरराष्ट्रीय मानक के अनुसार नवीनतम उत्पादन तकनीक के विकास और उच्च उपज उत्पादन के लिए ऑफ सीजन उत्पादन और इन प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन के लिए कार्य करेगा। केंद्र कमलम फल उत्पादन, मूल्य संवर्धन और कृषक समुदाय के आर्थिक विकास को बढ़ाने में भी आत्मनिर्भरता हासिल करने का लक्ष्य रखेगा।

मिलेट्स से जुड़े प्रयासों के लिए नेफेड और कृषि मंत्रालय के बीच समझौता

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने वैश्विक स्तर पर 'इंटरनेशनल ईयर ऑफ द मिलेट' 2023 में योगदान देने और इसे बढ़ावा देने के लिए अपने नोडल संगठन, नेफेड को निर्देश दिए हैं। श्री तोमर के मार्गदर्शन में नेफेड ने मिलेट्स से जुड़ी पहलों और प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर भी किए हैं।

सहयोग के तहत, नेफेड ने मिलेट्स-केंद्रित स्टार्टअप्स के लिए मार्केटिंग लिंकेज का विस्तार करना शुरू कर दिया है इनमें नेफेड बाजार रिटेल स्टोर्स में मिलेट्स कॉर्नर तैयार करना और दिल्ली-एनसीआर में मिलेट्स वेंडिंग मशीनें लगाना शामिल है। पौष्टिक मिलेट्स को बढ़ावा देने और मिलेट्स आधारित व्यंजनों के माध्यम से भारत के समृद्ध इतिहास पर जागरूकता पैदा करने के लिए दिल्ली हाट, आईएनए में एक मिलेट्स एक्सपीरियंस सेंटर बनाया जाएगा।

श्री तोमर ने कहा, प्रमुख खाद्य और पेय निकायों और सार्वजनिक और निजी दोनों उद्योगों सहित सभी केंद्रीय मंत्रालयों और राज्य सरकारों को भारत को मिलेट्स के लिए वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करने के साथ-साथ 'इंटरनेशनल ईयर ऑफ द मिलेट' 2023 को एक 'जन आंदोलन' बनाने के लिए प्रयास करना चाहिए।

पीएम फसल बीमा योजना में नवाचार के लिए 'डिजीक्लेम'

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत राष्ट्रीय फसल बीमा पोर्टल के डिजिटाइज्ड क्लेम सेटलमेंट मॉड्यूल डिजीक्लेम का शुभारंभ किया। इस नवाचार के साथ ही दावों का वितरण अब इलेक्ट्रॉनिक रूप से किया जाएगा, जिसका सीधा लाभ प्रारंभ में 6 राज्यों (राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड व हरियाणा) के संबंधित किसानों को होगा। दावा भुगतान की प्रक्रिया अब स्वचालित हो जाएगी क्योंकि राज्यों द्वारा पोर्टल पर उपज डेटा जारी किया जाता है। श्री तोमर ने बटन दबाकर इन 6 राज्यों के बीमित किसानों को 1260.35 करोड़ रु. के बीमा दावों का भुगतान किया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा पीएमएफबीवाई का शुभारंभ 6 साल पहले किया गया था और उनकी मंशा है कि अधिकाधिक किसानों को इसका लाभ मिले।

कार्यक्रम में श्री तोमर ने कहा कि डिजीक्लेम के साथ प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में नई विधा का शुभारंभ हुआ, जिससे केंद्र-राज्य सरकारों को सुविधा के साथ ही किसानों को क्लेम मिल जाएं, इसकी सुनिश्चितता पारदर्शिता के साथ की जा सकेगी। आयुष्मान भारत योजना के बाद प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना भारत की बहुत बड़ी योजना है जो प्राकृतिक परिस्थितियों पर आधारित है। पिछले 6 साल से संचालित इस योजना के अंतर्गत बीमित किसानों को उनकी उपज के नुकसान की भरपाई के रूप में अभी तक 1.32 लाख करोड़ रु. का भुगतान किया गया है।

कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री कैलाश चौधरी, उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री श्री सूर्यप्रताप शाही, केंद्रीय कृषि सचिव श्री मनोज अहूजा, पीएमएफबीवाई के सीईओ श्री रितेश चौहान सहित उ.प्र., राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड व हरियाणा के वरिष्ठ अधिकारी शामिल रहे। बीमा कंपनियों व बैंकों के प्रतिनिधि भी कार्यक्रम में उपस्थित थे, वहीं सैकड़ों प्रतिनिधि वर्चुअल जुड़े थे।

कच्चे जूट के न्यूनतम समर्थन मूल्य को मंजूरी

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने 2023-24 सीजन के लिए कच्चे जूट के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को अपनी मंजूरी दे दी है। यह मंजूरी, कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी) की सिफारिशों पर आधारित है।

2023-24 सीजन के लिए कच्चे जूट (टीडी-3, पहले के टीडी-5 ग्रेड के बराबर) का एमएसपी 5050 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया गया है। यह उत्पादन की अखिल भारतीय भारित औसत लागत पर 63.20 प्रतिशत की अतिरिक्त आय सुनिश्चित करेगा। 2023-24 सीजन के लिए कच्चे जूट का घोषित एमएसपी, उत्पादन की अखिल भारतीय भारित औसत लागत के कम से कम 1.5 गुना के स्तर पर एमएसपी तय करने के सिद्धांत के अनुरूप है, जिसे सरकार द्वारा 2018-19 के बजट में घोषित किया गया था।

यह लाभ के रूप में न्यूनतम 50 प्रतिशत का आश्वासन देता है। यह जूट उत्पादकों को बेहतर पारिश्रमिक सुनिश्चित करने और गुणवत्ता वाले जूट फाइबर को प्रोत्साहित करने की दिशा में विभिन्न महत्वपूर्ण और प्रगतिशील कदमों में से एक है।

जूट कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (जेसीआई) मूल्य समर्थन संचालन करने के लिए केंद्र सरकार की नोडल एजेंसी के रूप में काम करना जारी रखेगा।

भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान में बीज प्रसंस्करण और भंडारण सुविधा का उद्घाटन

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के तहत झांसी में स्थित संस्थान भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान में बीज प्रसंस्करण और भंडारण सुविधा का उद्घाटन किया। इस अवसर पर महिला किसान सम्मेलन का आयोजन भी किया गया।

संस्थान के मुख्यालय के अतिरिक्त इस प्रकार के बीज प्रसंस्करण की 3 इकाइयां धारवाड़ और श्रीनगर स्थित क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों में स्थापित की गई हैं, जिन्हें कृषि मंत्रालय द्वारा 3.7 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता से वित्त पोषित किया गया है। महिला कृषक सम्मेलन के दौरान संस्थान/केन्द्रों द्वारा संचालित अनुसूचित जाति उप-परियोजना अंतर्गत लाभार्थी महिला कृषकों को 50 लाख रुपये मूल्य के कृषि यंत्रों का वितरण किया गया।

श्री तोमर ने अनुसूचित जाति उप-परियोजना के माध्यम से किसानों एवं महिला किसानों के

सशक्तिकरण हेतु संस्थान के प्रयासों की सराहना की और संस्थान द्वारा विकसित 300 से अधिक चारा फसल किस्मों तथा विभिन्न तकनीकों के विकास के लिए संस्थान के वैज्ञानिकों की प्रशंसा की। उन्होंने संस्थान के विभिन्न शोध कार्यों को अधिक से अधिक किसानों तक पहुंचाने पर जोर दिया। श्री तोमर ने किसानों के हित के लिए भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का उल्लेख करते हुए देश में पानी एवं चारे की पर्याप्त उपलब्धता की दिशा में और अधिक प्रयास करने का आह्वान किया।

40 हजार से अधिक अमृत सरोवर राष्ट्र को समर्पित

आजादी के अमृत महोत्सव के क्रम में प्रधानमंत्री ने 24 अप्रैल 2022 को मिशन अमृत सरोवर का शुभारंभ किया था, जिसका लक्ष्य था देशभर के हर जिले में कम से कम 75 अमृत सरोवरों का निर्माण और कायाकल्प करना। यह कार्य देश के ग्रामीण इलाकों में पानी के संकट पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से किया जा रहा है।

15 अगस्त, 2023 तक 50 हजार अमृत सरोवरों के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। ग्यारह महीने की छोटी सी अवधि में अब तक 40 हजार से अधिक अमृत सरोवरों का निर्माण किया जा चुका है, जो लक्ष्य के 80 प्रतिशत हिस्से के बराबर है।

इस मिशन का केंद्रीय बिंदु जन भागीदारी है, जिसमें हर स्तर पर लोगों की भागीदारी होती है। अब तक प्रत्येक अमृत सरोवर के लिये 54088 उपयोगकर्ता-समूहों का गठन किया जा चुका है। ये उपयोगकर्ता-समूह अमृत सरोवर के विकास की पूरी प्रक्रिया के दौरान हर तरह से संलग्न रहेंगे, जैसे उपादेयता मूल्यांकन, काम शुरू करना और सरोवर का इस्तेमाल। राज्य/केंद्र शासित प्रदेश अमृत सरोवर के निर्धारित स्थलों पर आधारशिला रखने के लिए 26 जनवरी व 15 अगस्त जैसे महत्त्वपूर्ण दिनों में ध्वाजारोहण के लिये स्वतंत्रता सेनानियों, पंचायतों के बुजुर्ग सदस्यों, स्वतंत्रता सेनानियों और वीरगति प्राप्त सैनिकों के परिजनों, पद्म पुरस्कार विजेताओं, आदि की भागीदारी सुनिश्चित कर रहे हैं। अब तक, 1784 स्वतंत्रता सेनानियों, पंचायतों के 18,173 बुजुर्ग सदस्यों, स्वतंत्रता सेनानियों के 448 परिजनों, वीरगति को प्राप्त सैनिकों के 684 परिजनों और 56 पद्म पुरस्कार से सम्मानित लोगों ने इस मिशन में भागीदारी की है।

अहम बात यह है कि मिशन अमृत सरोवर ग्रामीण आजीविका में बढ़ोतरी कर रहा है, क्योंकि पूर्ण सरोवरों को सिंचाई, मत्स्य पालन, बतख पालन, सिंघाड़े की खेती और पशुपालन जैसी विभिन्न गतिविधियों के लिये चिह्नित किया गया है। आज की तारीख में 66 प्रतिशत उपयोगकर्ता-समूह कृषि में, 21 प्रतिशत मत्स्य पालन, छह प्रतिशत सिंघाड़े और कमल की खेती में और सात प्रतिशत समूह पशुपालन में संलग्न हैं। इन गतिविधियों को विभिन्न उपयोगकर्ता-समूह चला रहे हैं, जिनमें से प्रत्येक किसी न किसी अमृत सरोवर से जुड़ा है।

इसमें ग्रामीण विकास मंत्रालय के साथ रेल मंत्रालय, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय, जल शक्ति मंत्रालय, पंचायती राज मंत्रालय, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय जैसे केंद्रीय मंत्रालय मिलकर काम कर रहे हैं। इसके परिचालन में भास्कराचार्य नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पेस एप्लीकेंशंस एंड जियो-इंफॉर्मेटिक्स (बीआईएसएजी-एन) जैसे तकनीकी संगठन और सभी राज्य/केंद्र शासित प्रदेश सहयोग कर रहे हैं।

24 करोड़ मवेशियों को खुरपका-मुंहपका रोग का टीका लगा

खुरपका और मुंहपका रोग (एफएमडी) टीकाकरण अभियान के दूसरे चरण में पूरे देश में अब तक 25.8 करोड़ मवेशियों की लक्षित आबादी (राज्यों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के अनुसार) में से लगभग 24 करोड़ मवेशियों और भैंसों को कवर किया गया है। यानी 95 प्रतिशत से ज्यादा सार्वभौमिक कवरेज तक पहुंचा गया है, जो कि हर्ड इम्यूनिटी स्तर से बहुत ज्यादा है।

यह कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा 100 प्रतिशत वित्तपोषित है जो एफएमडी के खिलाफ टीकों की खरीद करता है और राज्यों को आपूर्ति करता है जिससे राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों को अभियान मोड में टीकाकरण करने में सक्षम बनाया जा सके। पशुपालकों को अपने पशुओं का टीकाकरण कराने के लिए विभिन्न सूचनाओं, शिक्षा एवं संचार के माध्यम से संवेदनशील और जागरूक बनाया जाता है और इस सुविधा का लाभ उठाने के लिए पशुधन

स्वास्थ्य कार्यकताओं/पशु चिकित्सकों से संपर्क करना होता है।

भारत में खुरपका और मुंहपका रोग पशुधन की एक प्रमुख बीमारी है। इससे दूध के उत्पादन में कमी होने से पशुपालकों को बहुत आर्थिक नुकसान होता है। इस समस्या से निपटने के लिए, पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) ने 2019 में राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एनएडीसीपी) की शुरुआत की जो अब पशुधन स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण कार्यक्रम का एक हिस्सा है। वर्तमान में इसके तहत सभी मवेशियों का टीकाकरण किया जा रहा है। ●

आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश की परिकल्पना को साकार करने वाला बजट

उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने अपने इस साल के बजट में कृषि और उससे जुड़े तमाम अन्य क्षेत्रों पर विशेष फोकस किया है। प्रदेश में गौ-आधारित प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने गंगा जी के तटवर्ती 27 जनपदों तथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र के 7 जनपदों को इसके दायरे में लिया है। गौ-आधारित खेती के लिए भारत सरकार ने भी केन्द्रीय बजट में व्यवस्था की है। प्रदेश सरकार भी इसके लिए व्यवस्था करने जा रही है। वर्तमान में प्रदेश में 85,000 हेक्टेयर में गौ-आधारित खेती का कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। साथ ही, जैविक उत्पादों के लिए टेस्टिंग लैब की स्थापना की गयी है। प्रथम चरण में मंडल स्तर पर मंडियों में इसकी व्यवस्था की जा रही है। प्रत्येक कृषि विज्ञान केन्द्र में भी टेस्टिंग लैब होगी, जो प्राकृतिक उत्पादों की जांच करेगी। इससे किसानों को अपने जैविक उत्पाद का बेहतर मूल्य प्राप्त होगा। सिंचाई परियोजनाओं का दायरा बढ़ाया गया है। वर्ष 1972 में प्रारम्भ हुई सरयू नहर परियोजना को वर्ष 2021 में राष्ट्र को समर्पित किया गया। राज्य सरकार ने प्रदेश में 20 से अधिक सिंचाई परियोजनाओं को पूरा किया है। तमाम परियोजनाओं को पूरा करने के लिए बजट में प्रावधान किए गए हैं।

वर्ष 2012 से 2017 के मध्य 94 लाख मीट्रिक टन गेहूं की खरीद की गयी, जिसके लिए 12,800 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया। वहीं वर्ष 2017 से 2022 के मध्य 219 लाख मीट्रिक टन से अधिक गेहूं की खरीद की गयी। इसके लिए 40,159 करोड़ रुपये का भुगतान किसानों को सीधे खाते में किया गया है। वर्ष 2012 से 2017 के दौरान 123 लाख मीट्रिक टन धान की खरीद हुई और 17,190 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया। वहीं वर्ष 2017 से 2022 के मध्य 280 लाख मीट्रिक टन धान की खरीद किसानों से की गयी और 50,420 करोड़ रुपये का भुगतान अन्नदाता किसानों के खाते में किया गया। वर्ष 2022-23 में 10 लाख 75 हजार 303 किसानों से 64 हजार मीट्रिक टन धान क्रय किया गया और 13,192 करोड़ रुपये का भुगतान डीबीटी के माध्यम से सीधे अन्नदाता किसानों के खाते में किया गया।

अब तक 1 लाख 98 हजार करोड़ रुपये से अधिक का गन्ना मूल्य का भुगतान किया गया हे, जो पूर्ववर्ती सरकार द्वारा किए गए भुगतान से 1 लाख 02 हजार करोड रुपये अधिक है। वर्तमान में 5800 करोड़ रुपये का गन्ना मूल्य का भुगतान बकाया है। प्रदेश में 119 चीनी मिलें संचालित हैं, जिनमें 100 से अधिक चीनी मिलें 10 दिन में गन्ना मूल्य का भुगतान कर रही हैं।

पीएम कुसुम योजना के अन्तर्गत 30,000 सोलर पम्प की स्थापना की कार्यवाही की जा रही है। एफपीओ के गठन के लिए भी युद्धस्तर पर कार्यवाही चल रही है। आगामी वित्तीय वर्ष में शहजाद बांध स्प्रिंकलर सिंचाई परियोजना, मध्य गंगा परियोजना, कचनौदा बांध व लखेरी बांध परियोजना को पूर्ण करने का लक्ष्य है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि नमामि गंगे परियोजना के अन्तर्गत 52 एसटीपी परियोजनाएं स्वीकृत हैं, जिनमें 28 परियोजनाएं पूर्ण हो चुकी हैं। 17 परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है और 7 परियोजनाओं पर शीघ्र ही कार्य प्रारम्भ होगा। नमामि गंगे परियोजना का परिणाम प्रयागराज कुम्भ-2019 भी है। राज्य सरकार ने प्रयागराज कुम्भ-2019 का दिव्य एवं भव्य आयोजन किया। इस कुम्भ ने स्वच्छता, सुरक्षा व सुव्यवस्था का मॉडल दुनिया के सामने प्रस्तुत किया।

प्रदेश में खाद्य प्रसंस्करण नीति के लिए धनराशि की व्यवस्था की गयी है। दलहन, तिलहन के बीज के मिनी किट उपलब्ध कराने के लिए भी धनराशि निश्चित की गयी है। राज्य सरकार जनपद कुशीनगर में महात्मा बुद्ध के नाम पर कृषि विश्वविद्यालय स्थापित करने जा रही है। इसके लिए बजट में व्यवस्था की गयी है। कृषि विज्ञान केन्द्र और कृषि विश्वविद्यालय आपसी समन्वय के साथ कार्य कर रहे हैं। कृषि क्षेत्र में स्टार्टअप व इन्क्यूबेटर की स्थापना के लिए बजट में प्रावधान किया गया है। टिश्यू कल्चर प्रयोगशाला, सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर हनी के लिए भी धनराशि की व्यवस्था है। निराश्रित गोवंश के लिए भी बजट में व्यवस्था की गई है। निराश्रित गोवंश की देखभाल के लिए 750 करोड़ रुपए की व्यवस्था की गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दुग्ध विकास से सम्बन्धित नीति के लिए धनराशि की व्यवस्था

की गई है। नन्दबाबा दुग्ध मिशन के लिए बजट व्यवस्था की गई है । मुख्यमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना, निषादराज बोट सब्सिडी योजना के लिए बजट व्यवस्था की गई है। जल जीवन मिशन में वर्ष 2022-23 में 19,500 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई थी। वर्ष 2023-24 में इसे बढ़ाकर 21,000 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। पहले बुन्देलखण्ड पानी के लिए तरसता था। आज हर घर तक पेयजल पहुंच रहा है। वर्ष 2023-24 में लघु सिंचाई के लिए 1,000 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। बाढ़ नियंत्रण के लिए अब तक 22 लाख 94 हजार हेक्टेयर भूमि बाढ़ से सुरक्षित किया गया है। वर्ष 2023-24 के बजट में 277 परियोजनाओं को पूर्ण करने का लक्ष्य हें

मुख्यमंत्री ने कहा कि ग्रामीण विकास के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत में ग्राम सचिवालय बनाया जा रहा है, जिससे ग्रामीणों को गांव में ही विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। बैंकिंग कॉरेस्पॉण्डेंट के माध्यम से गांवों में बैंकिंग सुविधाएं मुहैया करायी जा रही हैं।

उन्होंने कहा कि महिला स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से गांव की महिलाओं को स्वावलंबन से जोड़ा जा रहा है। बजट में मातृभूमि योजना का नया प्रस्ताव आया है। उत्तर प्रदेश का नागरिक यदि कहीं बाहर रहता है और उत्तर प्रदेश में अपने पूर्वज के नाम पर कोई कन्वेंशन सेंटर, सामुदायिक भवन आदि बनाना चाहता है, इसके लिए राज्य सरकार ने मातृभूमि योजना प्रारम्भ की है। इसके तहत सरकार द्वारा सहायता उपलब्ध करायी जाएगी। 60 प्रतिशत धनराशि सम्बन्धित व्यक्ति द्वारा वहन की जाएगी और 40 प्रतिशत राशि प्रदेश सरकार वहन 9करेगी। इस योजना की ओर बड़े पैमाने पर लोग आकर्षित हुए हैं।

जारी रहेगा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का प्रभावी क्रियान्वयन

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने प्रदेश में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का प्रभावी क्रियान्वयन जारी रखने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार के निर्देशानुसार समस्त जनपदों में खरीफ व रबी मौसम की मुख्य फसलों को ग्राम पंचायत स्तर पर अधिसूचित करते हुए यह योजना संचालित की जा रही। इस योजना से अधिक से अधिक किसानों को जोड़ा जाए। उन्होंने रबी 2022-23 मौसम में असामयिक वर्षा एवं ओलावृष्टि से फसलों को हुई क्षति के मामलों में नियमानुसार देय क्षतिपूर्ति के भुगतान के लिए तत्काल कार्रवाई करने के निर्देश दिये हैं।

एक सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अन्तर्गत वर्ष 2017-18 से वर्ष 2022-23 खरीफ की अवधि में प्रदेश के 48.21 लाख किसानों को 3957.38 करोड़ रुपये की क्षतिपूर्ति वितरित की जा चुकी है। इसके तहत वर्ष 2017-18 में 5.89 लाख किसानों को 373.98 करोड़ रुपये, वर्ष 2018-19 में 6.06 लाख किसानों को 452.66 करोड़ रुपये, वर्ष 2019-20 में 9.69 लाख किसानों को 1093.47 करोड़ रुपये, वर्ष 2020-21 में 6.38 लाख किसानों को 501 करोड़ रुपये, वर्ष 2021-22 में 10.12 लाख किसानों को 938.59 करोड़ रुपये तथा वर्ष 2022-23 में अनन्तिम तौर पर 10.07 लाख किसानों को 597.68 करोड़ रुपये की क्षतिपूर्ति उपलब्ध कराई गई है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में प्राकृतिक आपदाओं, रोगों, कृमियों से फसल को हुई क्षति की स्थिति में कृषकों को बीमा कवर के रूप में वित्तीय सहायता का प्रावधान है।

जल्द होगी ओलावृष्टि एवं वर्षा से फसलों को हुए नुकसान की भरपाई

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में जनपदवार ओलावृष्टि एवं वर्षा से फसलों को हुए नुकसान का तत्काल सर्वे कराकर प्रभावित किसानों को अनुदान राहत प्रदान के निर्देश दिये हैं।

राहत आयुक्त कार्यालय द्वारा उपलब्ध करायी गई जानकारी के अनुसार 31 मार्च 2023 से 02 अप्रैल, 2023 के मध्य राज्य के 10 जनपद- फतेहपुर, पीलीभीत, बरेली, सीतापुर, अलीगढ़, मुरादाबाद, सोनभद्र, हमीरपुर, सम्भल तथा उन्नाव ओलावृष्टि/वर्षा से प्रभावित हुए हैं। ओलावृष्टि/वर्षा से प्रभावित जनपदों में फसल क्षति का प्लॉटवार आकलन कराया जा रहा है।

प्राप्त विवरण के अनुसार 15 मार्च, 2023 से अब तक हुए सर्वे में प्रदेश में हुई बेमौसम बारिश/ओलावृष्टि से 11 जनपदों-फतेहपुर में 5026 किसानों का 1343 हेक्टेयर, आगरा में 4738 किसानों का 2804.15 हेक्टेयर, बरेली में 3090 किसानों का 559 हेक्टेयर, चन्दौली में 11265 किसानों का 2986.81 हेक्टेयर, हमीरपुर में 396 किसानों का 271.83 हेक्टेयर, झांसी में 205 किसानों का 145 हेक्टेयर, ललितपुर में 7380 किसानों का 6216.23 हेक्टेयर, प्रयागराज में 9252 किसानों का 4448.20 हेक्टेयर, उन्नाव में 5505 किसानों का 2801 हेक्टेयर, वाराणसी में 58393 किसानों का 13112 हेक्टेयर तथा लखीमपुर खीरी में 2273 किसानों का 792.52 हेक्टेयर कृषि क्षेत्रफल प्रभावित हुआ है। इस प्रकार, 11 जनपदों में कुल 01 लाख 07 हजार 523 किसानों का कुल 35480.52 हेक्टेयर कृषि क्षेत्रफल प्रभावित हुआ है। प्रभावित किसानों को कुल 5859.29 लाख रुपये देय है।

गोवंश का संरक्षण करते हुए उनके खानपान आदि का आवश्यक प्रबन्ध किया जाये

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निराश्रित गो-आश्रय स्थलों के प्रबंधन और प्रदेश में दुग्ध उत्पादन/संग्रह की अद्यतन स्थिति की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार पशु संवर्धन तथा संरक्षण के लिए सेवाभाव के साथ सतत प्रयासरत है। गोवंश के संवर्धन तथा संरक्षण सहित सभी पशुपालकों के प्रोत्साहन के लिए सरकार द्वारा अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं। पात्र लोगों को इसका लाभ मिलना सुनिश्चित कराया जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जनभावनाओं का सम्मान करते हुए उनके चारे-भूसे के लिए भी आवश्यक प्रबंध किया गया है। प्रदेश में वर्तमान में संचालित 6719 निराश्रित गो-आश्रय स्थलों में 11 लाख 33 हजार से अधिक गोवंश संरक्षित हैं। विगत 20 जनवरी से 31 मार्च तक संचालित विशेष अभियान के तहत 1.23 लाख गोवंश संरक्षित किए गए। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाए कि प्रदेश के सभी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में कोई भी गोवंश निराश्रित न हो। जनपद संभल, मथुरा, मीरजापुर, शाहजहांपुर, संतकबीरनगर, अमरोहा, गौतमबुद्ध नगर, गाजियाबाद और फरुखाबाद में सर्वाधिक गोवंश संरक्षित किए गए हैं। उन्होंने चरणबद्ध रूप से सभी जिलों में इसी प्रकार निराश्रित गोवंश का बेहतर प्रबंधन किये जाने के निर्देश दिए हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी प्रकार के निराश्रित गो-आश्रय स्थलों को चारा-भूसा व अन्य आवश्यक कार्यों के लिए उपलब्ध कराई जाने वाली धनराशि सीधे गो-आश्रय स्थलों को उपलब्ध कराई जाए। इसके लिए डीबीटी प्रणाली उपयोग में लाएं। प्रत्येक माह की 25 से 30 तारीख तक गोवंश का सत्यापन करते हुए विकास खंड स्तर पर पशुपालन विभाग के अधिकारी और एडीओ पंचायत/बीडीओ द्वारा रिपोर्ट जिला प्रशासन को भेजी जाएगी। इसके बाद, अगले माह की 5 तारीख तक मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी और मुख्य विकास अधिकारी द्वारा शासन को रिपोर्ट भेजी जाएगी। यह सुनिश्चित किया जाए कि यह धनराशि गोवंश के लिए है, उसका सदुपयोग हो।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गोवंश संरक्षण के लिए प्रदेश में वृहद गो-संरक्षण केंद्र बनाए जा रहे हैं। यह सुखद है कि अब तक 274 वृहद गोवंश संरक्षण केंद्र क्रियाशील हो गए हैं। आगामी छह माह में शेष 75 वृहद गोवंश संरक्षण केन्द्र तैयार कर लिए जाएं। इससे आमजन को बड़ी सुविधा मिलेगी। गोवंश संरक्षण केन्द्रों पर केयर टेकर तैनात किए जाएं। गोवंश की बीमारी/मृत्यु की दशा में यह केयर टेकर सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि निराश्रित गोवंश के संरक्षण के लिए संचालित मुख्यमंत्री सहभागिता योजना के तहत अब तक 1 लाख 77 हजार से अधिक गोवंश आमजन को सुपुर्द किए गए हैं। कुपोषित बच्चों वाले परिवारों को दूध की उपलब्धता के लिए पोषण मिशन के अन्तर्गत 3,598 गोवंश दिए गए हैं। गोवंश की सेवा कर रहे सभी परिवारों को 900 रुपये प्रतिमाह की राशि हर महीने उपलब्ध करा दी जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अंत्येष्टि स्थल/श्मशान घाट पर उपयोग की जाने वाली कुल लकड़ी में 50 प्रतिशत गोवंश उपला/गोइठा का उपयोग किया जाए। यह उपला/गोइठा निराश्रित गो-आश्रय स्थल से उपलब्ध कराया जाए। गोइठा से होने वाली आय उस गो-आश्रय स्थल के प्रबंधन में उपयोग हो।

मुख्यमंत्री हैण्डलूम एवं पावरलूम उद्योग विकास योजना अनुमोदित

मंत्रिपरिषद ने मुख्यमंत्री हैंडलूम एवं पावरलूम उद्योग विकास योजना (सामान्य) को अनुमोदित कर दिया है। योजना में किसी प्रकार के संशोधन के लिए मुख्यमंत्री को अधिकृत किया गया है।

मुख्यमंत्री हैंडलूम एवं पावरलूम उद्योग विकास योजना (सामान्य) सम्पूर्ण प्रदेश के उन समस्त पावरलूम एवं हथकरघा बुनकरों के लिए संचालित की जाएगी जो पावरलूम/हथकरघा क्षेत्र के उत्पादन में निरन्तर अपना योगदान देते आ रहे हैं। यह योजना पांच वर्षों के लिए होगी। वित्तीय वर्ष 2023-24 में बजट की उपलब्धता के आधार पर लाभार्थियों को योजना का लाभ दिया जाएगा।

प्रदेश में हथकरघा एवं पावरलूम बुनकरों के भविष्य के रोजगार के दृष्टिगत हथकरघा एवं पावरलूम उद्योग को प्रोत्साहित किया जाना नितान्त आवश्यक है। पुरानी तकनीक एवं परम्परागत हथकरघा एवं पावरलूमों द्वारा उत्पादित वस्त्रों की गुणवत्ता आधुनिक तकनीक की अपेक्षा अच्छी नहीं रहती है तथा उत्पादन भी कम होता है। अच्छी गुणवत्ता के वस्त्र उत्पादित होने से तथा उत्पादन में वृद्धि होने से बुनकरों की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

इस योजना का उद्देश्य हथकरघा एवं पावरलूम बुनकरों को उन्नत किस्म के हथकरघा एवं पावरलूम प्रदान कर उनके पुराने परम्परागत हथकरघा एवं पावरलूम को आधुनिक हथकरघा एवं पावरलूमों में परिवर्तित करने की सुविधा प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त, इस उद्योग में आने के इच्छुक नवयुवकों एवं नवयुवतियों को इस रोजगार से जोड़कर नया रोजगार सृजन कराया जाएगा। ऐसे नवयुवक एवं नवयुवतियां, जो इस उद्योग में अपना स्वयं का स्वरोजगार स्थापित करने के इच्छुक हों, इस योजना का लाभ ले सकते हैं। ●

- विगत छह वर्षों में प्रदेश के बजट में दोगुने से अधिक की वृद्धि।
- प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय दोगुने से अधिक हुई।
- सर्वाधिक एक्सप्रेस-वे वाला प्रदेश बना यूपी।
- अपराधियों एवं माफिया के खिलाफ सरकार की कार्यवाही देश-दुनिया में बनी नजीर।
- एक जनपद-एक उत्पाद योजना ने प्रदेश के निर्यात को किया दोगुने से अधिक।
- रामायण सर्किट और बुद्ध सर्किट से मिलेगा पर्यटन को नया आयाम।

योगी सरकार के छह साल

उत्तर प्रदेश में योगी सरकार के छह साल पूरे होते ही लगातार सर्वाधिक समय तक मुख्यमंत्री रहने का रिकार्ड योगी आदित्यनाथ के नाम दर्ज हो गया है। यूपी छह वर्ष पहले तक बीमारू प्रदेश माना जाता था। निवेशक उत्तर प्रदेश में निवेश करने से डरते थे। नेतागिरी, गुंडागिरी, दादागिरी, हफ्तावसूली अपने चरम पर थी। इस बात को योगीजी ने गंभीरता से लिया और सबसे पहले कानून व्यवस्था को सुदृढ़ किया। ऐसे असामजिक लोगों के प्रति कानून का डर पैदा किया और ऐसा खौफ भर दिया कि आज उत्तर प्रदेश सर्वाधिक आकर्षक हो गया है। अभी हाल ही में संपन्न हुए उत्तर प्रदेश ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में आये 33.5 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव इसकी तस्दीक करते हैं।

- एक जनपद-एक उत्पाद योजना की शुरुआत उत्तर प्रदेश में की गयी थी। आज प्रदेश के सभी जनपदों का एक यूनीक प्रोडक्ट है। इस योजना ने प्रदेश के निर्यात को दोगुने से अधिक किया है। आज उत्तर प्रदेश एक्सपोर्ट का हब बन रहा है।
- लखनऊ में ब्रह्मोस मिसाइल तथा झांसी में भारत डायनामिक्स यूनिट लग रही है। कानपुर में डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग कॉरिडोर में अच्छा निवेश आ रहा है।
- प्रदेश में निवेश के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया गया है। इसी का परिणाम है कि यूपी में प्रति व्यक्ति आय दोगुनी से अधिक पहुंच गई है।
- नए भारत के नए यूपी के रूप में उभारने में सफलता प्राप्त की है। प्रदेश को नम्बर वन बनाने का संकल्प लिया है। राष्ट्रीय पटल पर एक नया सक्षम और समर्थ उत्तर प्रदेश उभर कर आया है।
- विगत छह वर्षों में प्रदेश के बजट में दोगुने से अधिक की वृद्धि हुई है। इस दौरान प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय दोगुने से अधिक हुई है तथा जीडीपी में भी दोगुने से अधिक बढ़ोतरी हुई है। राज्य को एक ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी बनाने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं।
- अयोध्या को मॉडल सोलर सिटी के रूप में विकसित करने की कार्यवाही को आगे बढ़ाया जा रहा है।
- यूपी सर्वाधिक एक्सप्रेस वे वाला प्रदेश बन गया है। इसके साथ ही सड़कों के निर्माण और इनके किनारे पर औद्योगिक गलियारा बनाने का भी अभूतपूर्व कार्य हुआ है।
- आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश के संकल्प को पूरा किया जा रहा है। बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास करके यहां के औद्योगिक विकास के लिए बेहतर माहौल तैयार किया गया है।
- छह वर्ष पहले तक पूर्वांचल पर पिछड़ेपन का दाग था। यहां के मासूम बच्चे इंसेफेलाइटिस का दंश झेलने को विवश थे। योगी सरकार बनने के बाद इसे शीर्ष प्राथमिकता दी गई और नियोजित प्रयासों से आज इंसेफेलाइटिस उन्मूलन का प्रयास सफल हो रहा है।
- प्रदेश में धार्मिक पर्यटन को प्रोत्साहित करने की योजनाओं पर कार्य हो रहा है। एक साथ दस नए एयरपोर्ट बन रहे हैं। दो एयरपोर्ट के लिए जमीन की व्यवस्था की जा रही है। ऐसे प्रयासों से उत्तर प्रदेश इक्कीस एयरपोर्ट हो जाएंगे।
- सरकार रामायण सर्किट और बुद्ध सर्किट का विकास करा रही है। इससे यह पूरा क्षेत्र पर्यटन के वैश्विक मानचित्र पर प्रमुखता से अंकित होगा।
- राजनैतिक स्थायित्व और गुड गवर्नेंस के नए दौर का सृजन हुआ है। प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध यूपी गुड गवर्नेंस, अपराध और भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टालरेंस, सबसे बड़े उपभोक्ता बाजार, सिंगल विंडो पोर्टल निवेश मित्र, निवेश फ्रेंडली नीतियों के साथ ईज ऑफ डूइंग में अग्रणी राज्य है।
- देश की कुल कृषि योग्य भूमि का ग्यारह प्रतिशत राज्य में है, लेकिन इस भूमि से देश के बीस प्रतिशत खाद्यान्न का उत्पादन हो रहा है। राज्य गेहूं, आलू, मटर, आम, आंवला, दुग्ध उत्पादन तथा गन्ना उत्पादन में प्रथम स्थान पर है।
- एक्सप्रेस-वे, अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना तथा प्रदेश के श्रमिकों, स्ट्रीट वेण्डर्स को भरण-पोषण भत्ता देने में प्रदेश का देश में प्रथम स्थान है।
- उत्तर प्रदेश देश में कृषि निवेशों पर कृषकों को देय अनुदान का डीबीटी के माध्यम से भुगतान करने वाला नम्बर एक राज्य है।
- वन डिस्ट्रिक्ट वन मेडिकल कॉलेज का कार्य प्रदेश में प्रगति पर है। छह वर्ष पहले तक प्रदेश में कुल 12 मेडिकल कॉलेज थे। आज 16 जनपदों को छोड़कर सभी जनपदों में मेडिकल कॉलेज की स्थापना हो चुकी है।

राज्य पशुधन मिशन में खर्च होंगे 60 करोड़ रुपये

मुख्यमंत्री ने उत्तराखंड आयुर्वेद विश्वविद्यालय ऋषिकुल के सभागार में आयोजित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय पशु चिकित्सा एवं आयुर्वेद संगोष्ठी में प्रतिभाग किया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत वैदिक काल से ही आयुर्वेद द्वारा पशुधन स्वास्थ्य के क्षेत्र में पारंपरिक ज्ञान को लागू करने वाला प्रमुख देश रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने पंचप्राण विकास रणनीति में देश के विकास लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी इसी समृद्ध प्राचीन विरासत और पारंपरिक ज्ञान को सहेजने पर जोर दिया है। आयुर्वेद केवल चिकित्सा पद्धति ही नहीं अपितु आदर्श जीवन जीने का तरीका भी है। यह मात्र बीमारियों का इलाज नहीं करता बल्कि आयुर्वेद को अपनाकर हम अपने शरीर को बीमार होने से रोक सकते हैं। उन्होंने कहा कि पशुधन हमारे देश की बड़ी ताकत है, जिन्हें बचाना हमारा प्रमुख कर्तव्य है और मानव संसाधन के साथ ही आयुर्वेद के प्रयोग द्वारा हम अपने पशुधन को भी रोगमुक्त रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि आयुर्वेदिक पशु चिकित्सा द्वारा पशुओं के रोग निवारण और रोग नियंत्रण के लिए प्रदेश में मौजूद हर्बल संसाधनों का इस्तेमाल किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि कोराना काल में हम आयुर्वेद का महत्व अच्छी तरह समझ चुके हैं। मुख्यमंत्री ने वर्तमान में मनुष्यों से भी अधिक पशुओं में एंटीबॉयोटिक्स का इस्तेमाल करने पर चिन्ता व्यक्त करते हुये कहा कि यह स्थिति पशुओं के लिए ही नहीं, बल्कि हमारे लिए भी अत्यंत हानिकारक है, जिसे हम आयुर्वेद को अपनाकर ही नियंत्रित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में जड़ी-बूटियों का भंडार होने के कारण यहां आयुर्वेद का और भी अधिक महत्व है।

उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड को प्रकृति का वरदान है। यहां अनेकों नदियां बारहों महीने बहती हैं तथा 71 प्रतिशत भूभाग वनों से अच्छादित है तथा हर क्षेत्र में अब पहाड़ का पानी व जवानी दोनों काम आ रही हैं। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि केंद्र सरकार के सहयोग से आयुष और आयुर्वेद के क्षेत्र में हम निरंतर कार्य कर रहे हैं और आयुर्वेद से होने वाले लाभों को आमजन तक पहुंचाने के लिए भी प्रयासरत हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार 300 आयुष हैल्थ व वेलनेस केन्द्रों के संचालन एवं 150 पंचकर्म केन्द्रों की स्थापना के लिए प्राथमिकता के साथ कार्य कर रही है। आयुर्वेद, होम्योपैथी व नेचुरोपैथी के विकास द्वारा रोजगार व आर्थिकी को भी व्यापक विस्तार देते हुये, इसके लिए हम प्रयासरत हैं।

उन्होंने बताया कि हमारी सरकार ने प्रदेश में राज्य पशुधन मिशन शुरू किया है, इसके तहत 60 करोड़ का निवेश किए जाने की योजना बनाई गई है। इससे सात हजार पशुपालकों को प्रत्यक्ष और दस हजार पशुपालकों को अप्रत्यक्ष रोजगार का अवसर मिला है। हमने इस बार के बजट में स्थानीय निकायों में पशुधन, गौ सदन के निर्माण के लिए 14.15 करोड़ का प्रावधान किया है, वहीं गौ पालन योजना के लिए 2.79 करोड़ का प्रावधान भी अलग से किया गया है।

योजनाओं के क्रियान्वयन में विलम्ब होने पर तय होगी अधिकारियों की जिम्मेदारी

मुख्यमंत्री आवास में विधानसभा क्षेत्र थराली, कर्णप्रयाग, केदारनाथ, रूद्रप्रयाग, देवप्रयाग, यमकेश्वर, श्रीनगर, चौबट्टाखाल, नरेन्द्रनगर, पौड़ी, लैंसडाउन एवं रामनगर में संचालित विकासपरक कार्यों की समीक्षा के दौरान मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि मुख्यमंत्री द्वारा की गई घोषणाओं को पूर्ण करने में लेटलतीफी होने पर अधिकारियों की जिम्मेदारी तय की जाए। सभी कार्य निर्धारित समयावधि में पूर्ण किये जाएं। कार्यों के प्रति किसी भी प्रकार की शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जायेगी। जो अधिकारी पांच साल या उससे अधिक समय से एक ही स्थान पर जमे हैं, उनकी लिस्ट बनाई जाए। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधि गणों द्वारा विधानसभा क्षेत्रों में विभिन्न घोषणाओं के लिए जो भी प्रस्ताव आते हैं, उनका पहले भलीभांति परीक्षण कर लिया जाए। यह भी स्पष्ट किया जाए कि यह घोषणा कितनी समयावधि में पूर्ण हो जायेगी।

उन्होंने कहा कि राज्य में एक नई कार्य संस्कृति लागू करनी है। जन समस्याओं के शीघ्र समाधान के लिए अधिकारी संवादहीनता को दूरकर आपसी समन्वय बढ़ाकर कार्य करें। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिये कि विधायकगणों द्वारा अपनी विधानसभा क्षेत्रों की जिन जन समस्याओं को बैठक में रखा गया है, सभी विभागीय सचिव उनको प्राथमिकता में लेते हुए यथाशीघ्र समाधान करें। जल जीवन मिशन के कार्यों में और तेजी लाई जाए। राज्य के पर्वतीय जनपदों में पर्यटन को बढ़ावा देने, स्वास्थ्य सुविधाओं एवं अन्य मूलभूत सुविधाओं के लिए जो घोषणाएं की गई हैं, उनको निर्धारित समयावधि में पूर्ण किया जाए।

ईको टूरिज्म और जड़ी-बूटी को बढ़ाने पर चर्चा

मुख्य सचिव डॉ. एस.एस. संधु ने सचिवालय स्थित अपने सभागार में प्रदेश में ईको टूरिज्म और जड़ी-बूटी को बढ़ावा दिए जाने के सम्बन्ध में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी जिलाधिकारियों के साथ बैठक ली। बैठक के दौरान मुख्य सचिव ने कहा कि प्रदेश में 70 प्रतिशत से अधिक वन क्षेत्र होने के कारण वन प्रदेश की आर्थिकी का महत्वपूर्ण संसाधन बन सकता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में वनों को आर्थिकी से जोड़ने की आवश्यकता है। हम वनों एवं पर्यावरण को बिना नुकसान पहुंचाए ईको टूरिज्म और इनसे प्राप्त होने वाली जड़ी-बूटियों के माध्यम से प्रदेश में रोजगार सृजन और आर्थिकी को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

मुख्य सचिव ने कहा कि ईको टूरिज्म की भांति जड़ी-बूटी को बढ़ावा देने के लिए राज्य स्तर पर मुख्य सचिव की अध्यक्षता में एवं जिला स्तर पर जिलाधिकारी की अध्यक्षता में समितियों का गठन किया गया है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक जिले में, जहां भी सम्भव हो, हर्बल विलेज स्थापित किए जाएं।

उन्होंने निर्देश दिए कि सभी जनपदों में वन क्षेत्रों में जड़ी-बूटियों की सम्भावनाओं को तलाशते हुए प्रस्ताव तैयार किए जाएं। हितधारकों से संवाद स्थापित कर के इस कार्य में आ रही समस्याओं और उनके निराकरण पर कार्य किया जाए। इसमें वन पंचायतों, स्वयं सहायता समूहों और स्थानीय लोगों को साथ लेकर जड़ी-बूटियों का उत्पादन 100 गुना या इससे भी अधिक बढ़ाए जाने की दिशा पर प्रयास किए जाएं। मुख्य सचिव ने कहा कि जड़ी-बूटी के लिए रवन्ना व्यवस्था के सरलीकरण की आवश्यकता है। इसके लिए शीघ्र ही केन्द्र सरकार के नेशनल ट्रांजिट पास से इसे जोड़ा जाएगा। उन्होंने कहा कि जड़ी-बूटियों के उत्पादन और चुगान के लिए श्रमिकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने पूर्व के शासनादेशों का सरलीकरण भी किए जाने के निर्देश दिए, ताकि कार्यों को आसान किया जा सके।

मुख्य सचिव ने चकराता वन प्रभाग में बनाए गए ईको टूरिज्म और ट्रेकिंग सर्किट थड़ियार मार्च के प्रस्तुतीकरण को देखकर इसी की तर्ज पर अन्य जनपदों में भी इस प्रकार के सर्किट विकसित किए जाने की बात कही।

प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए 182 करोड़ की चार परियोजनाओं का शिलान्यास

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया एवं मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उत्तराखण्ड में स्वास्थ्य से संबंधित लगभग 182 करोड़ रुपए की चार परियोजनाओं का शिलान्यास किया। जिसमें 124.10 करोड़ की लागत से दून मेडिकल कॉलेज में 500 शैय्या के नवीन ब्लॉक का निर्माण, रुद्रप्रयाग में 20.38 करोड़ की लागत से क्रिटिकल केयर ब्लॉक का निर्माण, श्रीनगर मेडिकल कॉलेज में 18.80 करोड़ की लागत से क्रिटिकल केयर ब्लॉक का निर्माण एवं हल्द्वानी (नैनीताल) में 19.48 करोड़ की लागत से क्रिटिकल केयर ब्लॉक का निर्माण कार्य शामिल है। मुख्यमंत्री आवास स्थित मुख्य सेवक सदन में आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया जोशीमठ से वर्चुअल माध्यम से जुड़े। उन्होंने कहा कि आज राज्य में 180 करोड़ से अधिक कार्यों का शिलान्यास हुआ है। उत्तराखण्ड विकास की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रदेश की स्वास्थ्य से जुड़ी योजनाओं के लिए केन्द्र सरकार पूरा सहयोग देगी।

उत्तराखण्ड में स्वास्थ्य के क्षेत्र में सहयोग के लिए मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री का आभार व्यक्त किया। ●

सरकार के एक साल पूर्ण होने पर मुख्यमंत्री ने की 16 घोषणाएं

उत्तराखण्ड सरकार के एक साल का कार्यकाल पूर्ण होने पर प्रदेशभर में सरकार की एक साल की उपलब्धियों पर आधारित विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रेंजर्स ग्राउण्ड, देहरादून में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित विकास पुस्तिका 'एक साल नई मिसाल' का विमोचन किया। इस अवसर पर ग्राम तरला नागल सहस्त्रधारा मार्ग में 12.45 हेक्टेयर में बनने वाले लगभग 37 करोड़ रुपए की लागत के सिटी फोरेस्ट का शिलान्यास भी मुख्यमंत्री द्वारा किया गया। कार्यक्रम स्थल पर मुख्यमंत्री ने कन्या पूजन के साथ विभिन्न विभागों द्वारा लगाये गये बहुद्देशीय शिविर का अवलोकन किया। प्रदेश के सभी जनपदों में जनपद के प्रभारी मंत्रियों, विधायकगणों एवं अन्य जन प्रतिनिधियों ने सरकार के एक साल पूर्ण होने पर आयोजित किये गये कार्यक्रमों में प्रतिभाग किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने अपनी एक साल की उपलब्धियां बताते हुए अगले एक साल के लिए अपनी सराकर के लक्ष्य बताये। मुख्यमंत्री द्वारा जो अगले एक साल के लिए जो घोषणाएं की गयीं, वह इस प्रकार हैं-

- राज्य में मुख्यमंत्री प्रतियोगी परीक्षार्थी परिवहन योजना शुरू की जायेगी। इस योजना के तहत परीक्षाओं में भाग लेने वाले परीक्षार्थियों को आने-जाने के लिए परिवहन निगम की बसों में किराये में 50 प्रतिशत की छूट दी जायेगी।
- कक्षा 6 से ही कम्प्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी की शिक्षा को लागू किया जायेगा।
- राज्य के सभी 13 जनपदों में लैब ऑन व्हील्स चलती-फिरती प्रयोगशाला स्थापित की जायेगी।
- उत्तराखण्ड राज्य साइंस टेक्नोलॉजी और इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी कॉरिडोर के रूप में विकसित किया जायेगा। साथ ही राज्य सरकार इस क्षेत्र में शीघ्र ही साइंस और टेक्नोलॉजी इनोवेशन पॉलिसी लायेगी।
- हल्द्वानी गौलापार में स्थापित अन्तरराष्ट्रीय स्टेडियम को उच्चीकृत कर अन्तरराष्ट्रीय मानकों का खेल विश्वविद्यालय स्थापित किया जायेगा।
- राज्य में काश्तकारों को सहयोग देने के लिए मुख्यमंत्री औद्यानिकीकरण योजना प्रारम्भ की जायेगी।
- राज्य में पशुपालकों को सहयोग देने के मुख्यमंत्री राज्य पशुधन मिशन प्रारम्भ किया जाएगा।
- राज्य में मुख्यमंत्री कौशल विकास एवं रोजगार योजना प्रारम्भ की जायेगी। जिसमें स्नातक पास छात्र एवं छात्राओं को आवश्यक रूप से दक्ष बनाया जायेगा।
- 250 से अधिक आबादी बाले गांवों को मुख्य सड़कों से जोड़ने के लिए मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना प्रारम्भ की जाएगी।
- प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में उपलब्धता एवं उपयुक्तता के आधार पर 01-01 अमृत सरोवर / झील को पर्यटक स्थल एवं वाटर स्पोर्टस के केन्द्र के रूप में विकसित किया जाएगा।
- जिला सेवायोजन एवं कौशल विकास कार्यालय को स्वरोजगार केन्द्र के नोडल कार्यालय के रूप में विकसित किया जाएगा।
- श्रमिकों के बच्चों को भी उचित स्कूली शिक्षा मिल सके इस हेतु राज्य सरकार मोबाईल स्कूल (चलते-फिरते स्कूल) प्रारम्भ किये जायेंगे।
- राज्य सरकार द्वारा दिवालीखाल से गैरसैंण तक के सड़क मार्ग के चौड़ीकरण का कार्य किया जायेगा।
- लोकतंत्र सेनानी की मृत्यु होने पर उनकी पेंशन विधवा पत्नी को दी जाएगी।
- उत्तराखण्ड के लोकपर्वों उत्तरायणी, फूलदैई, हरेला, ईगास, बूढ़ीदिवाली आदि लोकपर्वों को व्यापक पहचान दिलाए जाने एवं पूर्ण श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाए जाने के लिए समेकित नीति बनाई जाएगी।

एक साल में लिए गये महत्वपूर्ण निर्णय

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार द्वारा मसूरी में 'सशक्त उत्तराखण्ड@25 थीम' पर आयोजित व्यापक चिंतन और विचार-विमर्श द्वारा क्षेत्रवार राज्य के विकास का न केवल खाका तैयार किया गया बल्कि इस पर तेजी से काम भी शुरू किया जा चुका है। अंत्योदय परिवारों को तीन गैस सिलेंडर देने हों, प्रदेश की महिलाओं के लिए क्षैतिज आरक्षण की व्यवस्था को लागू करना हो, समान नागरिक संहिता का मसौदा तैयार करने की कार्यवाही हो, जबरन धर्मांतरण पर रोक के लिये कानून बनाना हो, नई शिक्षा नीति लागू करनी हो, नई खेल नीति लागू करनी हो, सख्त नकल विरोधी कानून हो, राज्य आंदोलनकारियों व उनके आश्रितों को सरकारी नौकरियों में 10 प्रतिशत का क्षैतिज आरक्षण देना हो, सरकार ने राज्य के लिए आवश्यक इन कार्यों को इतने कम समय में करके दिखाया है। राज्य में सख्त नकल विरोधी कानून बनाया गया है। उत्तराखंड में पहली बार परीक्षाओं में धांधली करने वाले 80 से ज्यादा लोगों को जेल में डाला है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में देवभूमि उत्तराखंड का तेजी से विकास हो रहा है। पिछले वर्षों में केंद्र सरकार द्वारा विभिन्न महत्वपूर्ण परियोजनाएं प्रदेश के लिए न केवल स्वीकृत की गई हैं बल्कि इनमें से कई पूर्ण होने की कगार पर भी हैं। प्रधानमंत्री जी ने गौरीकुंड-केदारनाथ और गोविंदघाट-हेमकुंड साहिब रोपवे का शिलान्यास किया है और उन्हीं के मार्गदर्शन में मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी पर अभूतपूर्व कार्य हो रहा है। उत्तराखंड के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए डबल इंजन की हमारी सरकार निरंतर कार्य कर रही है।

राज्य में भांग की खेती को वैध करने की दिशा में विचार

भांग की खेती का अध्ययन करने के लिए एक समिति का गठन किया गया। देश के कई राज्यों में भांग की खेती को कानूनी दायरे में रखा गया है।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खु ने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य में भांग की खेती को वैध बनाने की दिशा में विचार कर रही है, जिससे राज्य के लिए राजस्व अर्जित होगा। वहीं यह औषधीय और औद्योगिक क्षेत्र के लिए कारगार साबित होगी। भांग में कई औषधीय गुण पाए जाते है। इसके औषणीय गुणों के इस्तेमाल से कैंसर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, अवसाद आदि से ग्रसित मरीजों को काफी राहत मिलती है।

मुख्यमंत्री ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार ने भांग की खेती का अध्ययन करने के लिए एक समिति का गठन किया है, जिसमें पांच विधायकों को सदस्य बनाया गया है। समिति उन इलाकों का दौरा करेगी, जहां भांग की अवैध खेती होती है। समिति सभी पहुलुओं का गहनता से अध्ययन करने के उपरांत एक महीने के भीतर अपनी रिपोर्ट सरकार को सौपेंगी। इसी रिपोर्ट के आधार पर भांग की खेती को वैध करने के बारे में सरकार अंतिम निर्णय लेगी।

उन्होंने कहा कि विश्व के कई देशों में भांग की खेती को कानूनी मान्यता दी गई हैं। वहीं देश के कई राज्यों में भांग की खेती को कानूनी दायरे में रखा गया है। उत्तराखंड वर्ष-2017 में भांग की खेती को वैध करने वाला देश का पहला राज्य बना है। इसके अलावा गुजरात, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में भी भांग की नियंत्रित खेती की जा रही है। प्रदेश सरकार इन सभी पहुलाओं कां भी ध्यान में रखते हुए ही कोई निर्णय लेगी।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खु ने कहा कि भांग की खेती राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए काफी फायदेमंद साबित हो सकती है, लेकिन यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि इसका इस्तेमाल नशे के तौर पर न हो।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खु ने कहा कि भारत की संसद में वर्ष 1985 में एनडीपीएस अधिनियम के तहत भांग को परिभाषित किया था, जिसके तहत भांग के पौधे से राल और फूल निकालने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया है। लेकिन यह कानून औषधीय और वैज्ञानिक उद्देश्यों के लिए भांग की खेती की विधि और सीमा निर्धारित करता है। अधिनियम की धारा 10 (ए) के अंतर्गत राज्यों को किसी भी भांग के पौधे की खेती, उत्पादन, कब्जा, परिवहन, खपत, उपयोग और खरीद तथा बिक्री, भांग की खपत (चरस को छोड़कर) के संबंध में नियम बनाने का अधिकार देती है। राज्यों को सामान्य या विशेष आदेश द्वारा, केवल फाइबर या बीज प्राप्त करने या बागवानी उद्देश्यों के लिए भांग की खेती की अनुमति देने का अधिकार है।

कांगड़ा बनेगी पर्यटन राजधानी

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि पर्यटन राज्य की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। प्रदेश सरकार राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कांगड़ा जिला को पर्यटन राजधानी के तौर पर विकसित करने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रही है। इस दिशा में सरकार ने कांगड़ा जिला में विभिन्न परियोजनाओं का ब्लूप्रिंट तैयार किया है, जिसका उद्देश्य पर्यटकों को आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करवाना है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कांगड़ा जिला में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। यहां सुंदर धौलाधार पर्वत, ऐतिहासिक मंदिर और साहसिक गतिविधियों की अपार संभावनाएं विद्यमान हैं। राज्य सरकार जिला कांगड़ा में पारम्परिक पर्यटक स्थलों में आधारभूत ढांचा विकसित करने के लिए एशियन डिवेल्पमेंट बैंक द्वारा स्वीकृत 390 करोड़ रुपये व्यय करेगी। इससे जिले में पर्यटन को बढ़ावा देने से स्थानीय युवाओं को रोजगार और स्वरोजगार के अवसर सृजित होंगे।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने कांगड़ा जिला के धरोहर गांव परागपुर में अंतरराष्ट्रीय स्तर का गोल्फ कोर्स बनाने का निर्णय लिया है। पालमपुर क्षेत्र के सौंदर्यीकरण के लिए भी कई योजनाएं तैयार की जा रही हैं, जिसमें एक उन्नत किस्म का रिजॉर्ट, 24 घंटे के लिए पर्यटन गांव, एक आधुनिक रोलर स्केटिंग रिंक और एक वेलनेस सेंटर का निर्माण करना प्रस्तावित है। देहरा विधानसभा क्षेत्र के बनखंडी में 180 हेक्टेयर भूमि चिन्हित की है, जिसमें एक आधुनिक चिड़ियाघर बनाया जाएगा। इसके लिए 300 करोड़ की अनुमानित लागत पर आधारित विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

घर-द्वार पर मोबाइल पशु चिकित्सा सेवाएं बस एक फोन कॉल दूर

कृषि पर आधारित हिमाचल की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन एक प्रमुख घटक है। प्रदेश में कुल पशुधन आबादी लगभग 44.10 लाख है और इनकी देखभाल प्रत्येक ग्रामीण परिवार का एक अनिवार्य हिस्सा है। पशुधन की समय पर उचित देखभाल और पशुपालकों की आजीविका में वृद्धि के दृष्टिगत प्रदेश सरकार ने मोबाइल पशु चिकित्सा सेवाएं सुदृढ़ करने की दिशा में एक नई पहल की है।

पशुधन को समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण उपचार प्रदान किया जाए और पशुपालकों को पशु औषधालयों पर जाने और गुणवत्तापूर्ण दवाओं का लाभ उठाने जैसे अतिरिक्त खर्चों से बचाया जाए। इस उद्देश्य से प्रदेश में 'संजीवनी' परियोजना आरंभ की जा रही है।

वर्तमान में प्रदेश में पशुधन के लिए कृत्रिम गभार्धान, दवाएं, टीकाकरण, सर्जरी, बांझपन परीक्षण इत्यादि पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। इनका लाभ उठाने या उचित स्वास्थ्य देखभाल सुनिश्चित करने के लिए पशुपालकों को अपने पशुओं को निकटतम पशु औषधालयों में ले जाना पड़ता है। इससे यात्रा और परिवहन पर अतिरिक्त खर्च होता है। कई बार समय पर उपचार के अभाव में पशु बीमार होकर दम तोड़ देते हैं। ऐसे में प्रदेश में मोबाइल पशु चिकित्सा क्लीनिक स्थापित करने का प्रस्ताव है और यह क्लीनिक किसानों के घर-द्वार पर पशु चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध करवाएंगे।

पशुपालन विभाग ने 'संजीवनी' परियोजना के लिए इंडसइंड बैंक की सहायक कंपनी भारत फाइनेंशियल इन्क्लूजन लिमिटेड (बीएफआईएल) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम-पशुपालन विभाग-मोबाइल पशु चिकित्सा वैन (एनएडीसीपी- एएचडी-एमवीयू) के तहत 'संजीवनी' परियोजना घर-घर तक पशुधन देखभाल सुविधा सुनिश्चित करेगी और विभिन्न पशु चिकित्सा सेवाएं सिर्फ एक फोन कॉल पर उपलब्ध होंगी।

परियोजना के तहत पशुधन स्वास्थ्य देखभाल और टीकाकरण कार्यक्रम से संबंधित विभिन्न मामलों के लिए निदेशालय स्तर पर एकीकृत कॉल सेंटर स्थापित किया जाएगा। यह केंद्र पशुपालकों को टेली-मेडिकल-परामर्श, सरकारी योजनाओं की जानकारी, पशुधन स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण कार्यक्रम, शिकायत निवारण, प्रश्न-समाधान आदि जैसे विभिन्न पहलुओं पर व्यक्तिगत सहायता प्रदान करेगा।

इसके अंतर्गत प्रदेश के 12 जिलों में स्थित 44 खंडों में किसानों को सेवाएं उपलब्ध करवाई जाएंगी। राज्य में केंद्रीकृत कॉल सेंटर को इन 44 मोबाइल पशु चिकित्सा एम्बुलेंस के साथ एकीकृत किया जाएगा। कॉल सेंटर मोबाइल पशु चिकित्सा क्लीनिक वाहन और कार्यरत पशुधन क्लीनिक के बीच समन्वय सुनिश्चित करेगा। इससे पशु औषधालयों तक जाने और बीमार पशुओं के लिए गुणवत्तापूर्ण दवाएं प्राप्त करने पर किसानों का अतिरिक्त खर्च व समय बच सकेगा।

पशु चिकित्सा सेवाओं में उपचारात्मक सेवाएं, टीकाकरण, कृत्रिम गभार्धान, निवारक देखभाल और पशुपालन से संबंधित सभी जानकारी घर-द्वार पर उपलब्ध होंगी। एकीकृत टेलीमेडिसिन और सेवा प्रबंधन मंच के माध्यम से पशुपालन विभाग की फील्ड पशु चिकित्सा सेवाओं को तैनात किया जाएगा। यह प्लेटफॉर्म मोबाइल फोन एप्लिकेशन के माध्यम से पशु चिकित्सकों और किसानों को आपस में जोड़ेगा। मोबाइल ऐप सेवा वितरण, निर्धारित दवाओं और पशुओं की बीमारियों से संबंधित डेटा की दक्षता को भी ट्रैक करेगा। पशु चिकित्सा सेवाओं के अलावा किसानों को पशुओं के लिए पोषण देखभाल पर भी मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा।

'संजीवनी' परियोजना पशुपालकों की आजीविका को सशक्त बनाने की दिशा में एक किसान-हितैषी पहल है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में पशुधन को सुविधाजनक और गुणवत्तापूर्ण देखभाल सुनिश्चित होगी। विशेषतौर पर छोटे डेयरी किसानों को घर-द्वार पर समग्र रूप से पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने में यह एक गतिशील मंच साबित होगा। ●

मुरैना की गजक और रीवा के सुंदरजा आम को मिलेगी अंतर्राष्ट्रीय पहचान

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि मुरैना की गजक और रीवा के सुंदरजा आम को अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिलेगी। मुरैना की गजक का स्वाद, देश ही नहीं दुनिया में सराहा जा रहा है। रीवा के सुंदरजा आम की मिठास अद्भुत है। प्रदेश का चंबल और विंध्य क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर हैं।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मुरैना की गजक और रीवा के सुंदरजा आम को जीआई टेग मिलने से इन क्षेत्रों की राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर एक अलग पहचान बनेगी। मुख्यमंत्री ने विंध्य और चंबलवासियों को बधाई दी।

मुरैना की गजक को आवेदन क्रमांक 681 के संदर्भ में जीआई टैग जारी किया गया है। गुड़ या चीनी और तिल के मिश्रण से बनी इस पारंपरिक मिठाई का 100 वर्षों से अधिक का इतिहास रहा है।

रीवा का सुंदरजा आम अपनी अनूठी सुगंध और स्वाद के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जाना जाता है। कम चीनी और अधिक विटामिन ई की वजह से यह आम मधुमेह रोगियों के लिए भी हितकारी होता है। सुंदरजा आम को आवेदन क्रमांक 707 के संदर्भ में जीआई टैग प्राप्त हुआ है।

मध्यप्रदेश का सुप्रसिद्ध शरबती गेंहू अब देश की बौद्धिक संपदा में सम्मिलित हो गया है। कृषि उत्पाद श्रेणी में शरबती गेंहू सहित रीवा के सुंदरजा आम को हाल ही में जीआई रजिस्ट्री द्वारा पंजीकृत किया गया है। खाद्य सामग्री श्रेणी में मुरैना गजक ने जीआई टैग प्राप्त किया है। हस्तशिल्प श्रेणी में प्रदेश की गोंड पेंटिंग, ग्वालियर के हस्तनिर्मित कालीन, डिंडोरी के लोहशिल्प, जबलपुर के पत्थर शिल्प, वारासिवनी की हैंडलूम साड़ी तथा उज्जैन के बटिक प्रिंट्स को भी जीआई टैग प्राप्त हुआ है।

शरबती गेंहू सीहोर और विदिशा जिलों में उगाई जाने वाली गेंहू की एक क्षेत्रीय किस्म है जिसके दानों में सुनहरी चमक होती है। इस गेंहू की चपाती में फाइबर, प्रोटीन और विटामिन बी और ई प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। शरबती गेंहू को आवेदन क्रमांक 699 के संदर्भ में जीआई टैग जारी किया गया है।

जीआई आवेदन क्रमांक 701 के संदर्भ में मध्य प्रदेश की गोंड पेंटिंग को पंजीकृत किया गया है। मानव के प्रकृति के साथ जुड़ाव दर्शाने वाली इस जनजातीय चित्रकला की प्रथा गोंड जनजाति में प्रचलित है जिसे विभिन्न उत्सवों और अवसरों पर बनाया जाता है।

ग्वालियर के हस्तनिर्मित कालीन को जीआई आवेदन क्रमांक 708 के संदर्भ में पंजीकृत किया गया है। इस कालीन बुनाई में चमकीले रंगों का उपयोग कर पशु, पक्षी और जंगल के दृश्यों का रूपांकन किया जाता है। ये कालीन ऊनी, सूती और रेशम आधारित होते हैं।

डिंडोरी के अगरिया समुदाय के लोहशिल्प को आवेदन क्रमांक 697 के संदर्भ में जीआई टैग प्राप्त हुआ है। इस शिल्प में लोहे को गरम कर और पीट- पीटकर वांछित मोटाई और आकार के पारंपरिक औजार और सजावटी वस्तुएं बनाई जाती हैं।

जबलपुर का पत्थरशिल्प भेड़ाघाट में मिलने वाले संगमरमर पर केंद्रित है। इस हस्तशिल्प में भगवान की मूर्तियां, नक्काशीदार पैनल, सजावटी वस्तुएं और बर्तन बनाए जाते हैं। इस हस्तशिल्प का निर्यात मुख्यत फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया और अमरीका में किया जाता है। इसे आवेदन क्रमांक 710 के संदर्भ में पंजीकृत किया गया है।

बालाघाट के वारासिवनी में बनने वाली हैंडलूम साड़ीयों को आवेदन क्रमांक 709 के संदर्भ में जीआई टैग प्राप्त हुआ है। धारियों और चैक के जटिल पैटर्न में बनाए जाने वाली ये हल्की और महीन साड़ीयां अपनी सादगी की लिए जानी जाती हैं। सोलह हाथ की साड़ी सर्वाधिक लोकप्रिय है जिसमें प्रत्येक ताना धागा 16 बाना धागों पर बुनाया जाता है।

उज्जैन की प्राचीनतम कला बटीक प्रिंट को आवेदन क्रमांक 700 के संदर्भ में जीआई टैग प्राप्त हुआ है। बटिक शिल्पकार डाई की प्रक्रिया में मोम का प्रयोग कर कलात्मक पैटर्न और मोटिफ बनाते हैं।

सुंदरजा आम और मुरैना गजक को दिनांक 31 जनवरी 2023 को जीआई प्रमाणपत्र जारी किया गया है। शरबती गेंहू और गोंड पेंटिग के जीआई प्रमाणपत्र दिनांक 22 फरवरी 2023 को जारी किया गये हैं। डिंडोरी की लोहशिल्प, उज्जैन के बटिक प्रिंट्स, ग्वालियर के हस्तनिर्मित कालीन, वारासिवनी की हैंडलूम साड़ी और जबलपुर के पत्थर शिल्प के प्रमाणपत्र दिनांक 31 मार्च 2023 को जारी किए गए हैं।

प्रदेश की आदिवासी गुड़िया, पिथोरा पेंटिंग, काष्ठ मुखौटा, ढ़क्कन वाली टोकरी, और चिकारा वाद्य यंत्र के जीआई आवेदन विचाराधीन हैं।

मध्य प्रदेश राज्य मिलेट मिशन योजना लागू करने का निर्णय

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद ने प्रदेश में मध्य प्रदेश राज्य मिलेट मिशन योजना लागू करने का निर्णय लिया है। योजना का क्रियान्वयन संचालक, किसान-कल्याण तथा कृषि विकास के माध्यम से सभी जिलों में किया जायेगा। योजना की अवधि 2 वर्ष (2023-24 एवं वर्ष 2024-25) की होगी। इन 2 वर्षों में योजना में 23 करोड़ 25 लाख रुपए व्यय किए जाएंगे। किसानों को मोटे अनाज के उन्नत प्रमाणित बीज सहकारी/शासकीय संस्थाओं से 80 प्रतिशत अनुदान पर प्रदान किए जाएंगे। योजना की मॉनिटरिंग के लिए कृषि उत्पादन आयुक्त की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय समिति गठित की जाएगी।

मिलेट मिशन योजना की गतिविधियों का बड़े पैमाने पर प्रचार-प्रसार किया जाएगा। मिलेट फसलों के उत्पादन, प्रसंस्करण एवं विपणन को बढ़ावा देने के लिए किसानों के प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं राज्य के बाहर अध्ययन भ्रमण होंगे। मिलेट को बढ़ावा देने के लिए जिला एवं राज्य स्तर पर मेले, कार्यशाला, सेमीनार, फूड फेस्टिवल, रोड-शो किए जाएंगे।

मिलेट अनाज की फसलें कभी प्रदेश की खान-पान की संस्कृति के केंद्र में थी। वर्तमान में इन फसलों के पोषक महत्व को दृष्टिगत रखते हुए इन्हें बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है। इन फसलों की खेती प्रायः कम उपजाऊ क्षेत्रों में की जाती है। वर्तमान में उपभोक्ताओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ने से मिलेट फसलों की मांग बढ़ रही है। कोदो, कुटकी, रागी, सांवा जैसी फसलें स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत लाभदायक हैं। इन मिलेट फसलों के महत्व के दृष्टिगत इनको पोषक अनाज का दर्जा दिया गया है। इन फसलों के अनाज आयरन, कैल्शियम, फाइबर आदि से भरपूर होते हैं। इसलिए किसानों के बीच मिलेट फसलों की खेती को प्रोत्साहित करने एवं मिलेट फसलों से तैयार व्यंजनों का प्रचार-प्रसार किया जाना आवश्यक है।

डुंगरिया माइक्रो सिंचाई और टिकटोली डिस्ट्रीब्यूटरी परियोजना को मंजूरी

जल-संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट ने बताया कि मंत्रि-परिषद की बैठक में डुंगरिया माइक्रो सिंचाई परियोजना और टिकटोली डिस्ट्रीब्यूटरी परियोजना को पुनरीक्षित मंजूरी मिल गई है। केबिनेट द्वारा जिन दो परियोजनाओं की पुनरीक्षित मंजूरी दी गई है, उससे लगभग 6 हजार हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र सिंचित होगा।

ग्वालियर जिले में टिकटोली डिस्ट्रीब्यूटरी लघु सिंचाई परियोजना से सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। परियोजना की अनुमानित लागत 44 करोड़ 90 लाख रुपए है। परियोजना से 3 हजार 700 हेक्टयर क्षेत्र में सिंचाई होगी।

डुंगरिया माइक्रो सिंचाई परियोजना उज्जैन जिले के महिदपुर विकासखंड में क्षिप्रा नदी पर प्रस्तावित है। परियोजना में 9.37 एम.सी.एम. के बांध निर्माण और पाइप नहर का निर्माण किया जाएगा। परियोजना की लागत 104 करोड़ 74 लाख रुपए है। इससे 8 ग्राम में 3 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में रबी की सिंचाई होगी। परियोजना में 1.10 मेगावाट विद्युत खपत होगी। परियोजना से वन भूमि भी प्रभावित नहीं हो रही है।

चार जिलों में होंगे लाड़ली बहना सम्मेलन

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि लाड़ली बहना योजना के संबंध में पूरे प्रदेश की बहनें जागरूक हो रही हैं। विभिन्न जिलों में हो रहे सम्मेलनों में बहनों की व्यापक भागीदारी देखने को मिल रही हैं। योजना के लिए पात्रता की जानकारी भी बहनों को मिल रही है।

मुख्यमंत्री ने समत्व भवन में हुई बैठक में आगामी 13 अप्रैल को बड़वानी जिले के निवाली में होने वाले लाड़ली बहना सम्मेलन की तैयारियों की जानकारी वीडियो कॉन्फ्रेंस द्वारा जिला कलेक्टर से प्राप्त की। सम्मेलन में लगभग 150 करोड़ रुपए की लागत के कार्यों का लोकार्पण भी किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि लाड़ली बहना सम्मेलन के साथ विभिन्न विभागों के विकास कार्यों की प्रदर्शनी, श्रेष्ठ कार्य करने वालों का सम्मान, हितग्राहियों को हित लाभ वितरण, सीएम फैलो, जन सेवा मित्रों और पेसा मोबेलाइजर्स की भागीदारी से कार्यक्रम व्यवस्थित रूप से किया जाए। कलेक्टर बड़वानी ने बताया कि डॉ. चिन्मय पण्डया की उपस्थिति में अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा इसी दिन जिले के सालीटांडा राजपुर में भी एक कार्यक्रम हो रहा है, जिसके साथ हितग्राही सम्मेलन की रचना की गई है।

मुख्यमंत्री ने आगामी 19 अप्रैल को हरदा जिले के टिमरनी में होने वाले हितग्राही सम्मेलन, भू-अधिकार योजना हितग्राहियों को लाभान्वित करने आदि कार्यों के लोकार्पण और भूमि-पूजन के संबंध में कलेक्टर हरदा से तैयारियों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने सम्मेलन स्थल पर विकास प्रदर्शनी लगाने के साथ ही अधिक से अधिक नागरिकों द्वारा प्रदर्शनी के अवलोकन की व्यवस्था करने के निर्देश भी दिए।

राज्य सरकार समर्थन मूल्य पर खरीदेगी ग्रीष्मकालीन मूंग

राज्य मंत्रि-परिषद ने ग्रीष्मकालीन मूंग को समर्थन मूल्य पर खरीदे जाने को स्वीकृति प्रदान की है। किसान-कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री कमल पटेल ने बताया है कि ग्रीष्मकालीन मूंग समर्थन मूल्य पर खरीदे जाने से किसानों को लगभग दोगुना फायदा होगा। गत वर्ष मॉर्केट में ग्रीष्मकालीन मूंग की बिक्री लगभग 4 हजार रुपए प्रति क्विंटल हो रही थी। सरकार ने समर्थन मूल्य पर 7 हजार 225 रुपए प्रति क्विंटल की दर से खरीदी की थी। मंत्री श्री पटेल ने बताया कि मुख्यमंत्री श्री चौहान के नेतृत्व में सरकार ने इस बार भी वर्ष 2023-24 के लिये किसानों से ग्रीष्मकालीन मूंग को समर्थन मूल्य पर खरीदने का किसान हितैषी निर्णय लिया है।

अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023 में प्रदेश में मिलेट फसलों की खेती को प्रोत्साहित करने 2 वर्ष (2023-24 और 2024-25) के लिये म.प्र. राज्य मिलेट मिशन योजना को केबिनेट ने स्वीकृति प्रदान की है। मोटा अनाज (मिलेट) कभी प्रदेश की खान-पान संस्कृति का केन्द्र हुआ करता था। इन फसलों के पोषक महत्व को दृष्टिगत रखते हुए इन्हें बढ़ावा देने का निर्णय लिया गया है। कोदो-कुटकी, रागी जैसी फसलें स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत लाभदायक हैं।

मंत्री श्री पटेल ने बताया कि राज्य मिलेट मिशन योजना की मॉनिटरिंग के लिये राज्य स्तर पर कृषि उत्पादन आयुक्त की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय मॉनिटरिंग कमेटी का गठन भी किया गया है। कमेटी में अध्यक्ष के अतिरिक्त अपर मुख्य सचिव कृषि, प्रबंध संचालक राज्य विपणन संघ, प्रबंध संचालक राज्य पर्यटन विकास निगम एवं संचालक कृषि अभियांत्रिकी सदस्य होंगे। संचालक किसान-कल्याण एवं कृषि विकास इसके सदस्य सचिव रहेंगे।

नवम्बर माह तक बनकर तैयार हो जायेगी देवगढ़-बिलौआ नहर प्रणाली

जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट ने कहा कि देवगढ़-बिलौआ नहर प्रणाली नवम्बर 2023 तक बनकर तैयार हो जायेगी। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में वर्ष 2003 में मात्र 6 से 7 लाख हेक्टेयर रकबे में सिंचाई होती थी। प्रदेश सरकार ने सिंचाई योजनायें शुरू कर सिंचाई का रकबा 45 लाख हेक्टेयर तक बढ़ा दिया है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2025 तक सिंचाई रकबे को बढ़ाकर 65 लाख हेक्टेयर करने का लक्ष्य सरकार ने निर्धारित किया है।

उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) भारत सिंह कुशवाह ने कहा कि माँ रतनगढ़ बहुउद्देश्यीय सिंचाई परियोजना से जुड़ी देवगढ़-बिलौआ नहर प्रणाली के निर्माण से इस क्षेत्र में पैदावार के साथ-साथ जमीन की कीमत भी बढ़ेगी। इससे किसानों की तरक्की और प्रगति के नए द्वार खुलेंगे।

सांसद विवेक नारायण शेजवलकर ने कहा कि माँ रतनगढ़ बहुउद्देश्यीय सिंचाई परियोजना आधुनिक तकनीक से धरातल पर लाई जा रही है। इससे कम पानी में अधिक रकबे की सिंचाई हो सकेगी। लघु उद्योग निगम की अध्यक्ष श्रीमती इमरती देवी ने डबरा क्षेत्र को बड़ी सिंचाई परियोजना की सौगात दिलाने के लिये मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान एवं केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के प्रति आभार जताया। साथ ही क्षेत्रीय निवासियों की ओर से डबरा को जिला बनाने की मांग रखी।

अत्याधुनिक तकनीक से बनेगी माँ रतनगढ़ सिंचाई परियोजना

केन्द्रीय नागरिक उड्डयन एवं इस्पात मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि भारत की अत्याधुनिक तकनीक एवं वैज्ञानिक कौशल का इस्तेमाल कर 'माँ रतनगढ़ बहुउद्देश्यीय सिंचाई परियोजना' को मूर्तरूप दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा ग्वालियर एवं चंबल संभाग को सिंचाई परियोजना के रूप में दी गई इस क्रांतिकारी सौगात से किसानों के जीवन में खुशहाली के नए-नए आयाम जुड़ेंगे। श्री सिंधिया माँ रतनगढ़ बहुउद्देश्यीय सिंचाई परियोजना के तहत देवगढ़-बिलौआ नहर प्रणाली के पम्प हाउस-1 के निर्माण कार्य के भूमि-पूजन समारोह को संबोधित कर रहे थे। श्री सिंधिया ने लगभग 272 करोड़ रुपए लागत की देवगढ़-बिलौआ नहर प्रणाली के तहत डबरा विकासखंड के ग्राम बरकरी के समीप बनने जा रहे पम्प हाउस निर्माण कार्य का शुभारंभ किया।

श्री सिंधिया ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा लगभग 2245 करोड़ रुपए की लागत से मंजूर की गई माँ रतनगढ़ बहुउद्देश्यीय सिंचाई परियोजना से ग्वालियर, भिण्ड एवं दतिया जिले के 215 ग्रामों में 80 हजार हेक्टेयर से अधिक रकबे की सिंचाई होगी। परियोजना के हिस्से के रूप में 272 करोड़ रुपए लागत से मूर्तरूप लेने जा रही देवगढ़-बिलौआ प्रणाली से डबरा विधानसभा क्षेत्र के 36 ग्रामों की लगभग 19 हजार हेक्टेयर जमीन की सिंचाई होगी। यह अत्याधुनिक सिंचाई परियोजना पूरी तरह कम्प्यूटराईज्ड होगी। भूमिगत पाइप लाइन से उच्च दाब से सूक्ष्म सिंचाई पद्धति से पानी किसानों के खोतों तक पहुंचेगा। पम्प कम्प्यूटरीकृत पद्धति से संचालित होंगे और मोबाइल फोन से भी चालू एवं बंद किए जा सकेंगे। सिंचाई के साथ पाइप लाइन एवं स्प्रिंकलर के जरिए कीटनाशक और खाद भी फसलों को दिया जा सकेगा। ●

कृषि एवं संवेदनशील क्षेत्रों की निगरानी के लिए हरियाणा कर रहा है ड्रोन का उपयोग

हरियाणा सरकार ने बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के सर्वेक्षण, कृषि और बागवानी फसलों और सुरक्षा उद्देश्यों के लिए संवेदनशील क्षेत्रों की निगरानी आदि के लिए ड्रोन इमेजिंग एंड इंफॉर्मेशन सर्विस ऑफ हरियाणा लिमिटेड (दृश्य) की शुरुआत की है।

मुख्य सचिव श्री संजीव कौशल ने चंडीगढ़ में स्टार्टअप संगोष्ठी और उद्योग प्रज्वलित, 2023 का उद्घाटन करते हुए कहा कि भारत सरकार ने खराब मौसम के कारण फसलों की उपज और फसलों के नुकसान को समझने के लिए ड्रोन का उपयोग करने और फोटो को कैप्चर करने की आवश्यकता पर बल दिया है ताकि किसानों को उसके हिसाब से मुआवजा दिया जा सके।

मुख्य सचिव ने कहा कि ड्रोन इमेजिंग एंड इंफॉर्मेशन सर्विस ऑफ हरियाणा लिमिटेड (दृश्य) राज्य में युवाओं को पायलट ड्रोन प्रशिक्षण देगी, जिससे युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। राज्य सरकार अवैध खनन गतिविधियों पर अंकुश लगाने और राज्य में स्थायी खनन अभ्यास को सुनिश्चित करने के लिए भी ड्रोन का उपयोग कर रही है। सरकार राज्य में पराली जलाने पर निगरानी और रोकथाम के लिए ड्रोन का इस्तेमाल कर रही है। इस कदम से पराली जलाने के मामले पिछले साल की तुलना में 47 फीसदी कम हो गए हैं। वर्तमान में हम पराली जलाने की घटनाओं को पूरी तरह समाप्त करने की ओर कार्य कर रहे हैं।

हरियाणा में स्टार्टअप्स के बारे में बोलते हुए मुख्य सचिव ने कहा कि हरियाणा देश में एक स्टार्टअप इकोसिस्टम के प्रमुख केन्द्र के रुप में उभरकर आ रहा है। श्री कौशल ने कहा कि हरियाणा राज्य भारत की आबादी का सिर्फ 2 प्रतिशत है लेकिन प्रदेश केंद्र सरकार द्वारा एकत्र किए गए कुल जीएसटी राजस्व का 6.5 प्रतिशत हिस्सा देता है, जो खुद राज्य की औद्योगिक प्रगति के बारे में दर्शाता है। पहले हर कोई बेंगलुरु के बारे में बात करता था लेकिन अब लोग ज्यादातर गुरुग्राम के बारे में बात करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि राज्य सरकार ने स्टार्टअप संस्कृति के लिए वित्तीय और गैर-वित्तीय प्रोत्साहन दोनों के लिए ढांचा उपलब्ध करवाया है। राज्य में 15-59 वर्ष के कामकाजी आयु वर्ग की 65 प्रतिशत आबादी की उत्पादक जनशक्ति है। इसलिए राज्य सरकार ने स्टार्टअप्स वेयरहाउस, इनोवेशन कैंपस और मोबाइल एप्लीकेशन डेवलपमेंट सेंटर की स्थापना को भी प्रोत्साहन देने का काम किया है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार विश्वविद्यालयों में इन्क्यूबेशन सेंटर की स्थापना कर रही है। सरकार विभागों के बीच बेहतर तालमेल बनाने का कार्य कर रही है। हमने हाल ही में कौशल विकास और आईटीआई विभाग का नाम बदलकर युवा अधिकारिता और उद्यमिता विभाग किया है।

युवा अधिकारिता एवं उद्यमिता विभाग के आयुक्त एवं सचिव डॉ. विजय दहिया ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने हाल ही में अपने बजट भाषण में घोषणा की है कि युवाओं में उद्यमिता, स्टार्टअप को प्रोत्साहित करने के लिए ऊष्मायन केंद्र स्थापित किए जाएंगे और इसके साथ-साथ आवश्यकता अनुसार कौशल, व्यक्तित्व और कम्नीकेशन स्किल्स को भी तराशा जाएगा। इसके साथ-साथ बैंकों, वित्तीय संस्थानों और उद्यम से ऋण की सुविधा भी उपलब्ध करवाई जाएगी।

ड्रोन इमेजिंग और सूचना सेवा के सीईओ श्री टी. एल. सत्यप्रकाश ने ड्रोन इमेजिंग एंड इंफॉर्मेशन सर्विस ऑफ हरियाणा लिमिटेड (दृश्य) द्वारा कार्यान्वित परियोजनाओं का विवरण दिया।

पेमेंट में देरी होने पर सरकार करेगी 9 प्रतिशत ब्याज समेत भुगतान

हरियाणा के उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने बताया कि राज्य सरकार ने करीब अढ़ाई साल पहले किसानों की खरीदी गई फसल का भुगतान सीधे उनके बैंक-खातों में भेजने की जो प्रक्रिया शुरू की थी उसको पूरे देश में सराहा गया। इस बार भी सरकारी एजेंसियों द्वारा खरीदी गई फसल की पेमेंट सीधा किसानों के खाते में 48 से 72 घंटे के अंदर कर दी जाएगी, अगर देरी होती है तो उनको 9 प्रतिशत ब्याज समेत भुगतान किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि प्रदेश में गेहूं की सरकारी खरीद के लिए 408 मंडी, सरसों के लिए 102, दालों के लिए 11 और जौ के लिए 25 मंडियों को नामित किया गया है। अभी तक करीब 1.5 लाख मीट्रिक टन गेहूं मंडियों में पहुंचा है जिसमें से 18 हजार मीट्रिक टन की खरीद की गई है। पिछले वर्ष विभिन्न सरकारी एजेंसियों ने 67 लाख मीट्रिक टन गेहूं की खरीद की थी, हालांकि ओलावृष्टि से नुकसान तो हुआ है फिर भी इस बार भी इतनी ही खरीद होने की संभावना है, जबकि राज्य सरकार ने 76 लाख मीट्रिक टन की खरीद के लिए पुख्ता प्रबंध किए हुए हैं।

श्री चौटाला ने बताया कि हाल ही में हुई बारिश व ओलावृष्टि से हुए नुकसान को देखते हुए उन्होंने केंद्रीय उपभोक्ता मामलों के मंत्री पीयूष गोयल को पत्र लिखा था जिसमें गेहूं की चमक व नमी की मात्रा में कुछ छूट देने का अनुरोध किया था।

डिप्टी सीएम ने यह भी बताया कि राज्य सरकार के राजस्व में निरंतर वृद्धि हो रही है। वर्ष 2022-23 में अभी तक 10,395 करोड़ रुपए स्टैंप-ड्यूटी व अन्य राजस्व प्रदेश सरकार के खाते में एकत्रित हुए हैं।

प्रदेश के बड़े गांवों में लगाए जाएंगे सीसीटीवी कैमरे

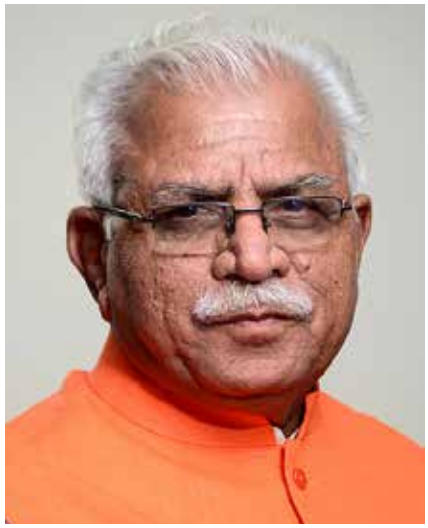

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि प्रदेश के बड़े गांवों में सुरक्षा की दृष्टि से सीसीटीवी कैमरे लगवाए जाएंगे। यह व्यवस्था जिला परिषद अथवा पंचायत से करवाई जाएगी या फिर प्रदेश सरकार इसके लिए कोई अन्य व्यवस्था करेगी, इसका फैसला जल्द लिया जाएगा। इसके अलावा, उन्होंने धतीर गांव से पातली गांव तक नई सड़क का निर्माण 45 लाख रुपए से करवाने तथा हजारी बंगला चौपाल की मरम्मत के लिए 10 लाख रुपए और धतीर से मडकोला तक 3.30 किलोमीटर लंबी सड़क के निर्माण के लिए 3 करोड रुपए मंजूर करने की घोषणा भी की।

श्री मनोहर लाल ने कहा कि प्रदेश सरकार अंत्योदय की भावना के साथ कार्य कर रही है। प्रदेश के 10 हजार से अधिक आबादी के 750 गांव में स्ट्रीट लाइट लगाने का कार्य भी किया जाएगा। उन्होंने कहा कि आज केंद्र सरकार से लेकर प्रदेश सरकार तक की नीयत विकास के मामलों में स्पष्ट है।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि आज देश की करोड़ों महिलाओं को इस योजना के तहत धुएं से निजात दिलाई गई है। उन्होंने कहा कि आज हम देश में सड़कें बनाने के साथ-साथ लोगों के जीवन को सुगम बनाने का रास्ता भी तैयार कर रहे हैं।

परिवार पहचान पत्र को परमानेंट प्रोटेक्शन ऑफ पुअर पीपल बताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि 2011 की जनगणना के अनुसार प्रदेश में 15 लाख आयुष्मान कार्ड बने थे लेकिन परिवार पहचान पत्र बनने के बाद इसमें साढ़े 14 लाख लोगों का नाम और जोड़ा गया है। उन्होंने कहा कि धतीर गांव में दिसंबर में 450 बीपीएल कार्ड थे और अब इनमें 350 बीपीएल कार्डों का और इजाफा हुआ है। दतिया गांव में 3598 आयुष्मान कार्ड बनाए गए हैं और इनमें से 17 लोगों ने अब तक इसका लाभ भी लिया है। उन्होंने कहा कि उनका लक्ष्य आम आदमी की आय 1.80 लाख रुपये से अधिक बढ़ाना है।

चिराग योजना का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि योजना के तहत अगर कोई भी होनहार बच्चा प्राइवेट स्कूल में पढ़ता है तो पहली से पांचवी तक के बच्चे को 700 रुपये, छठी से आठवीं कक्षा तक के बच्चे को 900 रुपये और 9वीं से 12वीं कक्षा तक के बच्चे को 1100 रुपये सरकार की तरफ से दिए जाएंगे। इस दौरान उन्होंने बताया कि धतीर गांव में अब तक 43 लाख रुपए के विकास कार्य हुए हैं।

सीएम विंडो पर आने वाली शिकायतों की प्रशासनिक सचिव हर माह करेंगे मॉनिटरिंग

हरियाणा के मुख्य सचिव संजीव कौशल ने कहा कि प्रशासनिक सचिव सीएम विंडो पर आने वाली शिकायतों की हर माह मॉनिटरिंग एवं समीक्षा और लंबित समस्याओं का निदान तीन माह में करना सुनिश्चित करें।

मुख्य सचिव सीएम विण्डो में आने वाली समस्याओं को लेकर विभिन्न विभागों के नोडल अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जिस क्षेत्र में अधिक समस्याएं आती हैं अधिकारी उन समस्याओं पर विशेष ध्यान रखें।

मुख्य सचिव ने कहा कि जिन विभागों में समस्यांए अधिक समय से लंबित हैं उन्हें सैम्पलिंग के आधार पर लेकर निपटाएं ताकि ओवरडयू को समाप्त किया जा सके। सभी लम्बित समस्याओं को आगामी तीन माह में समयबद्ध तरीके के निपटान करें। इसके अलावा सभी नोडल अधिकारी सीएम विण्डो पोर्टल को नियमित रूप से खोलकर समस्या का समाधान करने के लिए सकारात्मक प्रयास करें।

उन्होंने कहा कि सीएम विण्डो पोर्टल सीधा मुख्यमंत्री से जुड़ा हुआ है और मुख्यमंत्री मनोहर लाल स्वंय इसकी निगरानी कर रहे हैं। यदि कोई अधिकारी इसमें लापरवाही करेगा तो

उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। उन्होंने सहकारिता विभाग में इंस्पेक्टर लेवल तक की समस्याओं का प्रतिदिन निदान करने के लिए रजिस्ट्रार सहकारिता विभाग को विशेष हिदायतें जारी करने और एक्शन टेकन रिपोर्ट भेजने के निर्देश दिए।

मुख्य सचिव ने कहा कि जो समस्याएं पिछले तीन सालों से लंबित हैं उन्हें स्पेशल ड्राइव चलाकर निपटाएं। इनके लिए वर्ष अनुसार 30-30 दिन का समय निर्धारित करें और वर्ष 2023 तक की सभी समस्याओं का निपटान आगामी तीन माह में अवश्य सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि अब तक सीएम विण्डो पर 10 लाख 91 हजार 251 समस्याएं दर्ज हुई जिनमें से 9 लाख 52 हजार 292 समस्याओं का निपटारा किया जा चुका है। उन्होंने जनस्वास्थ्य, पावर, खाद्य एवं पूर्ति, कृषि, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता, योजनाकार, शहरी विकास प्राधिकरण, सहकारिता, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, स्कूल शिक्षा, वन एवं वन्य जीव, शहरी स्थानीय निकाय, भू एवं खनन, नागरिक सूचना एवं संसाधन विभागों की समस्याओं की विस्तार से समीक्षा की और अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

मुख्य सचिव ने वन एवं वन्य जीव विभाग के अधिकारियों को निशानदेही वाली समस्याओं को छोड़कर अन्य सभी समस्याओं को समयबद्ध ढंग से निपटाना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

बैठक में एसीएस कृषि श्रीमती सुमिता मिश्रा, सिंचाई विभाग के सलाहकार श्री देवेन्द्र सिंह, महानिदेशक नगर एवं योजना विभाग श्री टी एल सत्यप्रकाश, प्रबंध निदेशक उतर हरियाणा बिजली वितरण निगम डा. साकेत कुमार, निदेशक स्कूल शिक्षा डा. अंशज सिंह, निदेशक खाद्य एवं पूर्ति श्री मुकुल कुमार, मुख्यमंत्री के ओएसडी भूपेश्वर दयाल सहित कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

गेहूं खरीद में 80 प्रतिशत तक लस्टर लॉस और 18 प्रतिशत तक सिकुड़न-टूट की छूट

केंद्र सरकार ने गेहूं की सरकारी खरीद में बड़ी रियासत देते हुए 80 प्रतिशत तक लस्टर लॉस वाली और 18 प्रतिशत तक सिकुड़े-टूटे गेहूं को खरीदने की छूट दी है। इस संबंध में एक पत्र भी जारी कर दिया गया है जिसमें हरियाणा के उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला द्वारा केंद्रीय खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री पीयूष गोयल को 5 अप्रैल को लिखे पत्र का हवाला देते हुए कहा गया है कि भारी बारिश के कारण हुए नुकसान को देखते हुए केंद्र सरकार ने रबी सीजन 2023 -24 में लस्टर लॉस और सिकुड़े-टूटे गेहूं की खरीद में छूट देने की डिमांड को स्वीकार कर लिया गया है।

उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने केंद्र सरकार के इस निर्णय का स्वागत करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल का आभार जताया है। उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार ने अब अधिकतम 80 प्रतिशत तक हुए लस्टर लॉस पर भी गेहूं को खरीदने की छूट खरीद एजेंसियों को दे दी है। चमक में 10 प्रतिशत तक की कमी पर खरीद मूल्य में कोई कटौती नहीं होगी और इससे अधिक लस्टर लॉस होने पर नियमानुसार मामूली कटौती की जाएगी। इसी तरह गेहूं के दाने में 6 प्रतिशत सिकुड़न-टूट होने पर खरीद मूल्य में कोई कटौती नहीं होगी और 18 प्रतिशत तक सिकुड़े-टूटे दाने वाली गेहूं की खरीद पर केंद्र सरकार के नियमानुसार मामूली कटौती की जाएगी।

गत पांच अप्रैल को डिप्टी सीएम, जिनके पास खाद्य एवं आपूर्ति विभाग का प्रभार भी है, ने केन्द्रीय खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री पीयूष गोयल को गेहूं के गुणवत्ता मानदंडों में छूट प्रदान करने के लिए पत्र लिखा था।

श्री चौटाला ने पत्र में कहा था कि 1 अप्रैल 2023 से हरियाणा में गेहूं की खरीद शुरू हो चुकी है। मार्च 2023 में कटाई से ठीक पहले बारिश और ओलावृष्टि शुरू हो गई थी। जिसने हरियाणा में खड़ी फसलों को चौपट कर दिया। भारी बारिश के कारण गेहूं की फसल की चमक खराब होने के संबंध में प्रमुख खरीद जिलों कैथल, करनाल, कुरुक्षेत्र, फतेहाबाद, सिरसा, जींद और यमुनानगर से रिपोर्ट ली गई है। बार-बार होने वाली बारिश और ओलावृष्टि होने से उत्पादन कम हो सकता है और अनाज की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।

उपमुख्यमंत्री चौटाला ने कहा कि हरियाणा के किसानों की तरफ से उनके द्वारा लिखे गए पत्र पर सकारात्मक कदम उठाते हुए केन्द्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री ने रबी विपणन सीजन 2023-24 के दौरान खरीदे जा रहे गेहूं के गुणवत्ता मानदंडों में छूट प्रदान करने का जो निर्णय लिया है, वह प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि बेमौसमी बारिश और ओलावृष्टि से पीड़ित किसानों को सरकार के इस निर्णय से राहत मिलेगी। उपमुख्यमंत्री ने बताया कि खरीद के काम में नियुक्त सभी अधिकारियों को अनाज मंडियों और खरीद केंद्रों पर उचित प्रबंध करने और नए नियमों के अनुसार समयबद्ध खरीद करने के आदेश दिए गए हैं।

ग्राम पंचायतों को पंचायती भूमि को 20 वर्ष तक पट्टे पर देने की अनुमति

गौशाला, बायोगैस संयंत्र, पंचगव्य उत्पाद, पशु चिकित्सा अस्पताल, अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना करने वाली इच्छुक सामाजिक सोसायटी या धार्मिक संस्थाएं तथा चारे को उगाने के लिए अब शामलात भूमि को 20 वर्ष तक की अवधि के लिए पट्टे पर ले सकेंगी। इसके लिए हरियाणा सरकार ने पंजाब गांव सांझा भूमि (विनियमन) नियम, 1964 के उप-नियम (2क) में संशोधन किया है। गौशालाओं में पट्टा धारक को कुल पशु जनसंख्या का कम से कम 50 प्रतिशत बेसहारा पशुओं को पट्टा अवधि के दौरान गौशाला में रखना होगा।

यह निर्णय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल की अध्यक्षता में हुई मंत्रिपरिषद की बैठक में लिया गया। इन नियमों को पंजाब गांव सांझा भूमि (विनियमन) हरियाणा संशोधन नियम, 2023 कहा जाएगा।

उक्त संशोधन के बाद, अब ग्राम पंचायत को अपनी भूमि आवंटन के माध्यम से 20 वर्ष तक की अवधि के लिए कम से कम प्रति वर्ष 5100 रुपये प्रति एकड़ की दर से पट्टे पर देने की अनुमति होगी। धार्मिक संगठन को समाज के लिए परोपकारी योगदान के इतिहास के साथ उनके पूर्वजों को सत्यापित किया गया है जिसे जिला स्तरीय समिति और हरियाणा गौसेवा आयोग द्वारा अनुशंसित किया जाएगा।

शामलात देह में किसी भी भूमि को गौशाला निर्माण के उपरान्त प्रति 100 पशुओं (कम से कम 50 प्रतिशत बेसहारा पशु) के लिए 0.75 एकड़ के अनुपात में गौशाला की स्थापना हेतु पट्टे पर देने की अनुमति दी जायेगी।

शामलात देह में किसी भी भूमि को बायोगैस संयंत्र, पंचगव्य उत्पाद, पशु चिकित्सा अस्पताल, अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र आदि जैसे सहायक उद्देश्यों के लिए 1500 पशुओं (कम से कम 50 प्रतिशत बेसहारा पशु) वाली गौशाला को 2 एकड़ भूमि पट्टे पर देने की अनुमति दी जाएगी। गौशाला निर्माण के बाद गौचरण के लिए चिन्हित भूमि में से 1.5 एकड़ भूमि प्रति 100 पशुओं (कम से कम 50 प्रतिशत बेसहारा पशु) के लिए चारे की खेती हेतु पट्टे पर देने की अनुमति दी जाएगी। ●

राजस्थान की पहली वंदे भारत रेल का शुभारंभ

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि भौगोलिक दृष्टि से विशिष्ट पहचान के कारण राजस्थान में रेलवे के विकास की सर्वाधिक आवश्यकता बनी हुई है। उन्होंने कहा कि राजस्थान में तेज गति से औद्योगिक विकास हुआ है। इस कारण यहां रेल सुविधाएं बढ़े तो प्रदेश अर्थव्यवस्था की दृष्टि से देश में अग्रणी बनेगा।

श्री गहलोत जयपुर रेलवे स्टेशन पर वंदे भारत रेल के शुभारंभ समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में रेलवे का अहम योगदान है। आजादी के बाद रेलवे में आए बदलाव हमारे महान नेताओं की सोच, रेलवे के निष्ठावान कर्मचारियों और अधिकारियों की मेहनत का परिणाम है। रेलवे ने यात्री और माल परिवहन के साथ देश में प्राकृतिक आपदा और युद्ध के समय भी अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दी हैं।

इस अवसर पर राज्यपाल कलराज मिश्र, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत तथा रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने हरी झंडी दिखाकर रेल को रवाना किया। श्री गहलोत ने कहा कि वन्दे भारत ट्रेन राजस्थान के लिए एक बड़ी सौगात है। यह राजस्थान की प्रथम सेमी हाई स्पीड ट्रेन है, जिससे जयपुर से दिल्ली के बीच यात्रा का समय कम होगा। मुख्यमंत्री ने रेलमंत्री से आग्रह किया कि बांसवाड़ा, टोंक, करौली आदि मुख्यालयों को भी रेलवे सुविधाओं से जोड़ा जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि डूंगरपुर-बांसवाड़ा-रतलाम के बीच रेल सेवा के लिए राजस्थान सरकार और रेलवे बोर्ड के बीच एमओयू हुआ था। बांसवाड़ा में रेल लाइन का शिलान्यास भी किया गया था। पहली बार किसी राज्य सरकार द्वारा एक मेजर रेल प्रोजेक्ट के लिए भूमि सहित 1250 करोड़ रुपये दिए गए थे। लेकिन जनहित का यह काम आगे नहीं बढ़ा। उन्होंने इस प्रोजेक्ट को प्राथमिकता देने का आग्रह किया।

श्री गहलोत ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय सीमा और राष्ट्रीय सुरक्षा के महत्व को देखते हुए जैसलमेर-बाड़मेर को मुंद्रा और कांडला बंदरगाह से जोड़ने के लिए नई रेल लाइन निर्माण की आवश्यकता है। यह नई रेल लाइन केंद्र सरकार के उपक्रम एचपीसीएल एवं राज्य सरकार के एमओयू के अनुरूप बाड़मेर में चल रहे रिफाइनरी के कार्य तथा पश्चिमी क्षेत्र के विकास की दृष्टि से काफी लाभकारी सिद्ध होगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जयपुर से चित्तौड़गढ़ वाया अजमेर ब्रॉडगेज रेलवे मार्ग पर स्थित गुलाबपुरा (भीलवाड़ा) में मेमू कोच फैक्ट्री की स्थापना के लिए राज्य सरकार द्वारा 323 हेक्टेयर भूमि निःशुल्क आवंटित की जा चुकी है। उन्होंने आग्रह किया कि रेल मंत्रालय द्वारा गुलाबपुरा में मेमू कोच फैक्ट्री स्थापित करने के लिए सकारात्मक निर्णय लिया जाए।

समारोह में सांसद, विधायक सहित अन्य जनप्रतिनिधि, रेलवे के अधिकारी एवं आमजन उपस्थित रहे।

मुख्य सचिव ने की प्रधानमंत्री आदि-आदर्श ग्राम योजना की समीक्षा

मुख्य सचिव श्रीमती उषा शर्मा की अध्यक्षता में सचिवालय में प्रधानमंत्री आदि-आदर्श ग्राम योजना की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में मुख्य सचिव ने योजना के तहत जनजातीय क्षेत्रों में किए जा रहे विकास कार्यों की समीक्षा की।

बैठक में बताया गया कि योजना का उद्देश्य 5 वर्ष की अवधि में राज्य के 4 हजार 302 गांवों का विकास किया जाना प्रस्तावित है, जिसके तहत वर्ष 2022-23 में करौली, बारां, सिरोही, बूंदी, झालावाड़, कोटा, धौलपुर, टोंक,जालोर, अजमेर एवं जैसलमेर जिले के 709 गांवों को भारत सरकार के जनजातीय मामले मंत्रालय द्वारा चिह्नित किया गया है।

उल्लेखनीय है कि इस योजना के तहत पचास प्रतिशत से अधिक जनसंख्या वाले जनजातीय क्षेत्रों में प्राथमिक क्षेत्र यथा पेयजल, स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका, सड़क में आधारभूत विकास कर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

बैठक में जनजातीय क्षेत्रीय विकास विभाग और योजना से संबंधित विभागों के अधिकारियों ने वर्चुअली भाग लिया।

संरक्षित खेती के लिए एक हजार करोड़ रुपए का अनुदान

राजस्थान में संरक्षित खेती को बढ़ावा देने के लिए दो वर्षों में 60 हजार किसानों को 1 हजार करोड़ रूपए का अनुदान मिलेगा। यह राशि ग्रीन हाउस, शेडनेट हाउस, लो टनल, प्लास्टिक मल्चिंग के लिए दी जाएगी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अनुदान के प्रस्ताव को स्वीकृति दी है।

श्री गहलोत की स्वीकृति से किसानों को संबल मिलेगा। वित्तीय वर्ष 2023-24 में 30 हजार किसानों को 501 करोड़ रुपए का अनुदान दिया जाएगा। इसमें कृषक कल्याण कोष से 444.43 करोड़ रुपए वहन होंगे। साथ ही राष्ट्रीय बागवानी मिशन/राष्ट्रीय कृषि विकास योजना से 56 करोड़ (राज्यांश 22.75 करोड़) रुपए वहन किए जाएंगे।

बूंद-बूंद सिंचाई से संवर रहा किसानों का भविष्य

पानी की कीमत मरुधरा के किसान से ज्यादा कोई नहीं जानता। भारत में अधिकांश किसानों के फसल का भविष्य मौसम की मेहरबानी पर ही टिका होता है। ऐसे में राज्य सरकार का राजस्थान सूक्ष्म सिंचाई मिशन किसान और किसानी दोनों के लिए ही क्रांतिकारी कदम साबित हो रहा है। यह मिशन किसानों के लिए वरदान के रूप में आया है।

जोबनेर के बोबास गांव के 38 वर्षीय फूलचंद बैरवा एक ऐसे ही किसान हैं जिन्होंने इस मिशन का फायदा उठाया हैं। श्री फूलचंद बताते है पहले वे पारंपरिक तौर-तरीकों से खेती करते थे, जिसके कारण उनकी खुशहाली मानसून की मेहरबानी से तय होती थी। पानी की कमी के कारण पहले समय पर सिंचाई नहीं हो पाती थी, जिसके कारण कई बार उनकी मेहनत और फसल दोनों खराब हो जाती थी।

कुछ समय पहले ही फूलचंद को राज्य सरकार के राजस्थान सूक्ष्म सिंचाई मिशन के तहत संचालित बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति की जानकारी मिली। जानकारी मिलने के बाद फूलचन्द ने बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति के लिए आवेदन किया, आवेदन करने के बाद उनके डेढ़ हैक्टेयर खेत में फॉर्म पॉउंड तैयार किया गया, जिसमें ड्रिप सिस्टम के जरिये पूरे खेत में बूंद-बूंद सिंचाई होने लगी।

राजस्थान सूक्ष्म सिंचाई मिशन के तहत अधिकतम 5 हैक्टेयर के खेत में ड्रिप सिस्टम लगवाने के लिए राज्य सरकार द्वारा पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किसानों को 70 फीसदी अनुदान देय है, वहीं लघु एवं सीमांत किसानों, महिला किसानों और अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के किसानों को 5 प्रतिशत अतिरिक्त अनुदान देय है।

एक लाख 80 हजार की लागत से ड्रिप सिस्टम तैयार किया गया। इतनी बड़ी राशि के भुगतान में राजस्थान सरकार ने दिया। फूलचंद का साथ और सूक्ष्म सिंचाई मिषन के ड्रिप सिस्टम के तहत कुल लागत राशि का 75 फीसदी भुगतान राज्य सरकार ने किया। फूलचन्द बताते है कि इस ड्रिप सिस्टम से 90 फीसदी पानी की बचत हुई और पैदावार एवं आमदनी में भी बढ़ोतरी हुई। अब वे न केवल चैन से अपना जीवन बसर कर रहे हैं बल्कि अपने साथ ही किसानों को भी इस स्कीम का फायदा बताते हैं।

मुख्यमंत्री ने दी मंजूरी प्रदेश में सूक्ष्म सिंचाई व्यवस्था का होगा सुदृढ़ीकरण

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रदेश में सूक्ष्म सिंचाई व्यवस्था को अधिक सुदृढ़ बनाने हेतु डिग्गी, फार्म पौण्ड एवं सिंचाई पाइपलाइन आदि कार्यों के लिए लगभग 463 करोड़ रुपए के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की है। यह स्वीकृति राजस्थान सूक्ष्म सिंचाई योजना के अन्तर्गत दी गई है।

आगामी दो वर्षों में फार्म पौण्ड निर्माण के लिए 30 हजार किसानों को लाभान्वित करने के लक्ष्य को बढ़ाकर 50 हजार किया गया है। इस पर कुल 261.75 करोड़ रुपए खर्च होंगे। योजना में अनुसूचित जाति-जनजाति के गैर लघु-सीमांत कृषकों को भी अब लघु-सीमांत किसानों के समान 10 प्रतिशत अतिरिक्त अनुदान

मिलेगा। किसानों को प्रोत्साहित करने एवं सम्बल प्रदान करने के लिए प्लास्टिक लाईनिंग फार्म पौण्ड निर्माण हेतु अनुदान सीमा को भी 90 हजार से बढ़ाकर 1.20 लाख रुपए किया गया है। आगामी 2 वर्षों में 40 हजार किसानों को 16 हजार कि.मी. सिंचाई पाइपलाइन के लिए अनुदान दिया जाएगा। इस पर वर्ष 2023-24 में 43.20 करोड़ रुपए व्यय किए जाएंगे। वहीं, 5000 डिग्गियों के निर्माण पर वर्ष 2023-24 में 158 करोड़ रुपए व्यय होंगे।

उल्लेखनीय है कि श्री गहलोत द्वारा बजट 2023-24 में सिंचाई के जल की उपलब्धता एवं सूक्ष्म सिंचाई व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने संबंधी घोषणाएं की गई थी। ●

दीदीयों ने बनाया प्लास्टिक का आसान विकल्प कपड़े का थैला

यह कहानी है स्व सहायता समूह की दीदियों की जो पर्यावरण को प्लास्टिक मुक्त बनाने में अपना सहयोग दे रहीं हैं(साथ ही संदेश दे रहीं हैं कि स्वस्थ्य जीवन जीना चाहते हैं तो प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाकर कपड़े के थैले का इस्तेमाल करें।

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के मंशानुरूप दंतेवाड़ा जिले में लगातार पर्यावरण के हित में कई कार्य किये जा रहे हैं। साथ ही प्रशासन द्वारा समय-समय पर कठोर कदम भी उठाए जा रहे हैं। जिले में कलेक्टर के मार्गदर्शन में प्रतिबंधित पॉलीथिन के उपयोग के खिलाफ कार्यवाही लगातार की जा रही है। राजस्व विभाग और नगरी निकायों के द्वारा साप्ताहिक हाटों एवं दुकानों में निरीक्षण किया जा रहा है। यदि दुकानदार व विक्रेता पॉलीथिन उपयोग करते पाया जा रहा है तो उनके उपर आर्थिक अर्थदंड भी लगाया जा रहा है। प्लास्टिक ने जीवन को आसान बनाया है लेकीन प्लास्टिक पर हमारी निर्भरता ने हमारे जीवन के साथ अन्य जीवों और पर्यावरण को नुकसान पहुंचा कर अनेक दुष्प्रभावों को भी जन्म दिया है। पर्यावरण पर इसके प्रभाव की गंभीरता को देखते हुए शासन प्रशासन का प्रयास रहा के प्लास्टिक मुक्त कर स्वच्छ वातावरण बनाने में अपना योगदान दें। दंतेवाड़ा जिले को प्लास्टिक मुक्त जिला बनाने में प्रशासन भी लोगों के व्यवहार में परिवर्तन ला रहा है।

दंतेवाड़ा जिले में महिला सशक्तिकरण केन्द्र समूहों के महिलाओं के द्वारा कपड़े से निर्मित थैले का निर्माण किया जा रहा है। अब तक समूहों के द्वारा 11 सौ कपड़े के थैले निर्मित

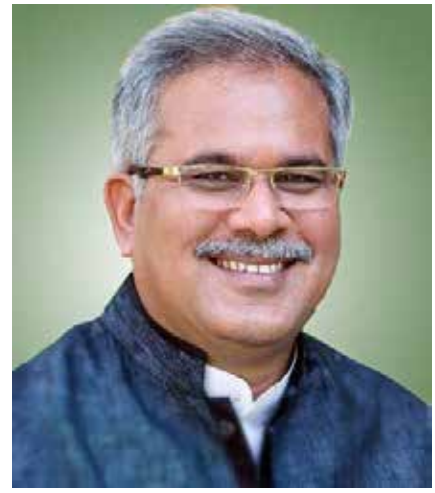

किये जा चुके हैं। समूहों के द्वारा एक थैला की कीमत 10 रुपए निर्धारित की गयी है। जिसमें से 6.64 क्विंटल बायोडिग्रेडबल कैरी बैग विक्रय किये गये हैं जिनकी लागत 1,40,610 रुपये है। इससे महिलाओं को 15,000 रुपये की आय प्राप्त हुई है। महिला सशक्तिकरण केन्द्र समूहों की दीदीयां बताती हैं कि उन्हें बेहद खुशी है कि पर्यावरण के हित में योगदान दे पा रहीं है। उनका कहना है कि यह पहला मौका है कि हम आर्थिक लाभ के साथ-साथ पर्यावरण के लिए कुछ कर पा रही हैं। समूहों कि दीदीयां प्रति महिला सालाना पोटाकेबिन, आंगनबाड़ी केन्द्रों का काम कर लगभग 30 हजार रुपए से ज्यादा कमा लेती हैं। वे कहती हैं कि बच्चों के स्कूल की फीस, घर के छोटे-मोटे खर्च, खुद के खर्च के साथ पर्यावरण के हित में काम कर पाना हमारे लिए खुशी की बात है।

किसानों के पास 31 मार्च तक का बकाया कर्ज चुकाने का मौका

राज्य के सहकारी बैंकों से जुड़े किसानों के लिए राज्य शासन की ओर से अच्छी खबर आयी है। राज्य शासन द्वारा किसान भाइयों के लिए एकमुश्त समझौता योजना 2023 लागू की गयी है। यह योजना एक वर्ष (31 मार्च 2024 तक) के लिए लागू रहेगी। किसानों के पास 31 मार्च 2024 तक बकाया राशि चुकाने का मौका है। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला सहकारी केंद्रीय मर्यादित बैंक रायपुर ने बताया कि किसान भाई भूमि विकास बैंक रायपुर के कार्यक्षेत्र अंतर्गत जिला रायपुर, महासमुंद, गरियाबंद, बलौदाबाजार, सारंगढ़-बिलाईगढ़ और धमतरी शाखाओं से किसानों द्वारा लिए गए मध्यकालीन/दीर्घकालीन कालातीत बकाया राशि की अदायगी के लिए एकमुश्त समझौता योजना-2023 का लाभ उठा सकते हैं।

इस एकमुश्त समझौता योजना के अंतर्गत वही किसान पात्र होंगे जो भूमि विकास बैंक का कालातीत ऋणी सदस्य हो। 31 मार्च 2022 तक 6 वर्ष से अधिक का कालातीत सदस्य रहा हो। सदस्य का खाता एनपीए होने की तारीख तथा समझौते की तारीख पर कुल बकाया ऋण दोनों में से जो भी कम होगा उसमें 6 प्रतिशत साधारण ब्याज की अदायगी के साथ जमा करनी होगी। यह समझौता योजना 31 मार्च 2024 तक सीमित है। समझौता दिनांक तक ऋण खाते में अधिभारित दण्ड ब्याज, विधिक व्यय एवं अन्य छूट भी बैंक द्वारा दी जाएगी। अधिक जानकारी के लिए किसान भाई अपने निकटतम जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की शाखा से सम्पर्क कर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर योजना का लाभ उठा सकते हैं।

सरगुजा संभाग के प्रतापपुर में युवा किसान ने नवाचार कर शुरू की सेब की खेती

छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है। कुछ समय पहले तक छत्तीसगढ़ के किसान धान की फसल के अलावा दूसरी फसलों के बारे में सोचते भी नहीं थे। लेकिन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के द्वारा किसानों के लिए शुरू की गयी जनहितकारी योजनाओं के चलते किसान अब नवाचार कर रहे हैं। धान के बदले दूसरी फसलें लेने के लिए शासन द्वारा शुरू की गयी योजना का लाभ लेकर किसान छत्तीसगढ़ जैसे गर्म प्रदेश में सेब की खेती कर रहे हैं।

सेब की खेती ठंडे प्रदेशों में हो सकती है, इस मिथक को तोड़ने की कोशिश प्रतापपुर के एक युवा कृषक ने की है। मुकेश गर्ग नाम के कृषक ने सूरजपुर जिले के प्रतापपुर जैसी गर्म जगह में अलग-अलग किस्म के सेब के सौ से ज्यादा पौधे लगाए हैं और कुछ में तो फल भी आने शुरू हो गए हैं। कुछ ही समय में ये पूरी तरह से तैयार होकर खाने लायक हो जायेंगे। कहा जा रहा है कि छत्तीसगढ़ में कहीं भी सेब की खेती हो सकती है और ये किसानों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है।

आमतौर पर सेब हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड जैसे कम तापमान वाले राज्यों में होता है क्योंकि वहां का मौसम सेब की खेती के लिए अनुकूल है। छत्तीसगढ़ का मौसम गर्म है और उसे सेब के अनुकूल नहीं माना जाता और इसकी खेती सपने जैसी है। लेकिन अब गर्म स्थानों में भी सेब की खेती हो सकती है।

उद्यान विभाग से मिली जानकारी

मुकेश गर्ग से मिली जानकारी के अनुसार खेती से उनका जुड़ाव शुरू से है।वे हमेशा कुछ अलग करने का प्रयास करते हैं। इस बीच उन्हें जानकारी मिली कि हिमाचल प्रदेश में सेब की ऐसी किस्म विकसित हुई है जो गर्म प्रदेशों में भी उग सकते हैं। मुकेश ने इसके लिए कृषि एवं उद्यानिकी विभाग से सम्पर्क किया और प्रतापपुर में सेब की नई किस्म के पौधे लगाए। उन्होंने इनके रोपण और रखवाली को लेकर उनसे और तरीके समझे तथा पौधे ऑर्डर किये और उनका रोपण कराया। एक वर्ष की अवधि में ये पौधे चार से छह फीट के हो चुके हैं,कई में फल भी आ चुके हैं।

पौधों की रखवाली और रोपण में तरीकों को लेकर उन्होंने बताया कि इसका मुख्य समय नवंबर से फरवरी के बीच होता है। इसके लिए उन्होंने पहले से ही दो बाई दो फीट गड्ढे तैयार करके रखे थे और गड्ढों को दीमक रोधी दवा (रीजेंट) से उपचारित किया गया था। गड्ढों में गोबर, मिट्टी और थोड़ा सा डीएपी डालकर पानी से भरकर रखे गए थे। इसका फायदा यह होता है कि गड्ढों को जितना बैठना होता है बैठ जाता है और पौधे लगने के बाद इनके रेशे टूटने का डर नहीं होता है। इसके बाद 1-2 दिन में पौधे रोपित कर दिए थे। इनके लिए ज्यादा पानी की आवश्यकता नहीं होती है, केवल गर्मियों में दो से तीन दिन में पानी देना होता है। ध्यान रखना होता है कि पौधों में बारिश के पानी का जमाव नहीं हो क्योंकि जड़ों के सड़ने का डर होता है।

सेब की इस किस्म के लिए 50 डिग्री तक का तापमान है अनुकूल

मुकेश गर्ग बताते हैं कि आमतौर पर सेब की फसल ठंडे प्रदेशों में होती है लेकिन सेब की फसल हरमन-99 के लिए अधिकतम 50 डिग्री तक का तापमान अनुकूल है। हरमन के साथ अन्ना और डोरसेट किस्म भी यहां के तापमान के अनुकूल है।

महिलाओं को मिल रहे रोजगार के अवसर

प्रदेश के गौठान आजीविका मूलक गतिविधियों के केंद्र बनकर उभर रहे हैं। इससे महिला स्व-सहायता समूहों को रोजगार मिल रहा है। गौठानों में वर्मी कम्पोस्ट निर्माण, मुर्गी पालन, मछली पालन, उद्यानिकी फसलों के साथ-साथ अब मसाला, साबुन निर्माण, तेल पेराई जैसी इकाईयां स्थापित कर रोजगार के अवसर सृजित किये जा रहे हैं। आमजन इससे सीधे लाभान्वित हो रहे हैं।

मुख्यमंत्री के निर्देश पर जशपुर जिले के नन्हेसर और पंडरापाठ गौठानों में तेल पेराई यूनिट लगाई गई है। जिला खनिज न्यास मद लगा यह यूनिट स्व सहायता समूह की महिलाओं के लिए आजीविका का साधन बन गया है। दोनों गौठानों में कार्यरत स्व-सहायता समूह की महिलाओं ने तेल मिल मिलने पर मुख्यमंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया है।

नन्हेसर गौठान की लक्ष्मी स्व-सहायता समूह की महिलाएं बताती हैं कि विभिन्न आजीविकामूलक गतिविधियां गौठान में पहले से ही संचालित की जा रही थीं और अब तेल मिल मिलने से महिलाएं खुश हैं। नन्हेसर गौठान की महिलाओं ने बताया कि अब तक वे 120 लीटर तेल पेराई कर चुकी हैं, जिसे 200 रुपये प्रति लीटर की दर से बेचकर उन्हें 24 हजार रुपये की आमदनी हुई है। साथ ही खली का विक्रय कर 9 हजार रुपये मिले हैं। ●

पूरे देश में चर्चित हुई खूंटी की कुदलूम पंचायत

पंचायती राज व्यवस्था का प्रतिफल है कि आज इस पंचायत के गांव से कोई पलायन नहीं करता और न ही बेरोजगारी है। यहां के अधिकांश ग्रामीण आत्मनिर्भर बन जीवन यापन कर रहें हैं। यहां ग्राम सभा ही सर्वोपरि है। खूंटी की यह कुदलूम पंचायत भारत सरकार द्वारा दिए जाने वाले राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार के तहत बेहतर सुशासन वाली पंचायत अवार्ड के लिए नॉमिनेट हुई है।

खूंटी के कर्रा प्रखंड में अवस्थित कुदलूम पंचायत में कुल 11 गांव एवं 13 वार्ड हैं। यहां की कुल जनसंख्या 6337 है। यह एक आदिवासी बहुल क्षेत्र है, जहां अनुसूचित जनजाति की संख्या 90%, अनुसूचित जाति 2% एवं अन्य 8% हैं। पंचायत अन्तर्गत शिक्षा संस्थान में एक उच्च विद्यालय, चार मध्य विद्यालय एवं 5 प्राथमिक विद्यालय हैं। 13 आंगनबाड़ी केंद्र एक स्वास्थ्य उप केन्द्र एवं तीन प्रज्ञा केन्द्र संचालित हैं।

बेहतर सुशासन के लिए नामित

कुदलूम पंचायत में सुशासन की व्यवस्था स्पष्ट परिलक्षित होती है। यहां पर प्रत्येक गांव में साप्ताहिक बैठक का आयोजन ग्राम प्रधान की अध्यक्षता में होती है। जिसमें गांव के प्रत्येक परिवार के सदस्यों की सहभागिता होती है। ग्राम सभा द्वारा ही सर्वसहमति से सभी समस्याओं का निष्पादन किया जाता है। पंचायत अन्तर्गत सर्वाधिक आबादी वाला गांव सोनमेर है। यहां 1000 से अधिक की जनसंख्या है लेकिन यहां की ग्राम सभा इतनी सुशासित है कि यह अपने आप में एक मिशाल है। इस ग्राम सभा की सबसे बड़ी देन है सोनमेर मन्दिर।

सभी का पूजा स्थल एक ही परिसर में

सोनमेर गांव में सभी जाति, धर्म, समुदाय के लोग रहते हैं। यहां एक ही परिसर में मन्दिर, सरना स्थल एवं गिरजाघर अवस्थित हैं। यह अनेकता में एकता का एक उदाहरण है। सोनमेर मन्दिर के निर्माण में सभी समुदाय के लोगों का बराबर सहयोग रहा। ग्राम सभा द्वारा ही श्रम दान देकर मन्दिर का निर्माण कार्य किया गया है। प्रतिदिन 15-20 ग्रामीण मन्दिर की व्यवस्था संचालन के लिए लगे रहते हैं। इसकी दिनचर्या ग्राम सभा द्वारा तय की जाती है। मन्दिर परिसर में पूजन सामग्री की दुकान, चाय-नास्ते एवं खिलौने की दुकान यह सब सोनमेर ग्रामवासियों का ही है। यहां के व्यवसाय में बाहरी लोगों का प्रवेश पूर्णतः वर्जित है। मन्दिर में पूजा कराने के लिए गांव के पाहान की नियुक्ति ग्राम सभा द्वारा की जाती है एवं उन्हें प्रतिदिन 350 रुपए के हिसाब से मानदेय दिया जाता है। सुशासन की मजबूत व्यवस्था के कारण आज न तो यहां से किसी का पलायन होता है और न ही कोई बेरोजगार है। अधिकांश लोग आत्मनिर्भर हैं।

सरकार की योजनाओं का लेते हैं लाभ

इस पंचायत को राज्य के अन्य पंचायतों की तरह ही केंद्र और राज्य सरकार द्वारा सहायता दी जाती है। राज्य सरकार द्वारा संचालित प्रायः सभी योजनाओं का लाभ पंचायत को प्राप्त होता है। जैसे कृषि ऋण माफी योजना, मुख्यमंत्री पशु विकास विकास योजना, मुख्यमंत्री रोजगार सृजन योजना, बिरसा हरित ग्राम योजना, वीर शहीद पोटो खेल विकास योजना इत्यादि जैसी योजनाओं का सहयोग ग्राम पंचायत को प्राप्त होता है और ग्रामीण योजनाओं का लाभ लेते हैं।

मनरेगा द्वारा संचालित योजनाओं की समीक्षा

ग्रामीण विकास विभाग के सचिव प्रशांत कुमार ने सभी उप विकास आयुक्तों को निदेश दिया कि मनरेगा द्वारा संचालित योजनाएं धरातल पर दिखाई दें। मनरेगा सिर्फ एक योजना नहीं है बल्कि यह ग्रामीणों के रोजगार का सृजन का सशक्त माध्यम भी है। उन्होंने विभिन्न जिलों में मनरेगा योजनाओं के क्रियान्यवन में हो रही देरी को लेकर कड़ी नाराजगी जतायी है।

सचिव ने मनरेगा के तहत संचालित योजनाओं में काम करने वाले श्रमिकों को रिजेक्टेड ट्रांजैक्शन के कारण हो रही परेशानी को एक सप्ताह में सुधार करवाने का निर्देश दिया। उन्होंने उप विकास आयुक्तों से कहा कि समय पर लक्ष्य पूरा करें। अधिकारी यह ध्यान दें कि शिकायतें नहीं मिलनी चाहिए। उन्होंने अमृत सरोवर योजना के अंतर्गत 75 तालाबों के जीर्णोद्धार/निर्माण की प्रगति की समीक्षा करते हुए ससमय कार्य पूर्ण कराने का निर्देश दिया।

कर्म सही हो तो आत्मा को स्वतः ही शांति मिलती है- दाजी

पद्मभूषण से सम्मानित श्री रामचंद्र मिशन के अध्यक्ष, हार्टफुलनेस ध्यान के आध्यात्मिक मार्गदर्शक और हार्टफुलनेस एजुकेशन ट्रस्ट के संस्थापक श्री कमलेश डी. पटेल (दाजी) को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने एनएएससी परिसर, पूसा, नई दिल्ली में सम्मानित किया। यहां श्री दाजी ने कृषि वैज्ञानिकों के साथ हार्टफुलनेस ध्यान किया, उनसे चर्चा की।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री श्री तोमर ने कहा कि श्री दाजी वो शख्सियत है जिन्हें हम अध्यात्म व विज्ञान का अग्रदूत कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी, ऐसे महान साधक को अपने बीच पाकर कृषि बिरादरी धन्य है। श्री तोमर ने कहा कि किसी भी व्यक्ति के विकास में भौतिक अधोसंरचना का तो महत्व होता ही है लेकिन समुच्य विचार करते हुए शरीर के साथ मन, बुद्धि, आत्मा को अच्छी तरह से एकीकृत करके समग्र विकास की कल्पना को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। संसार में सभी लोग सुख व प्रसन्नता की खोज में हैं लेकिन इन्हें प्राप्त के लिए जिन विधियों को अपनाया जाता है, वे अंतहीन है, इन्हें प्राप्त करना है तो कर्म के साथ अध्यात्म का पथ बहुत महत्वपूर्ण है। श्री दाजी में हम अध्यात्म व कर्म दोनों का समुच्य देख सकते हैं। उनका मार्गदर्शन, जीवनचर्या, दूरगामी सोच, प्रकृति से प्रेम और वसुंधरा के प्रति समर्पण, इन सबके प्रकाश में मार्ग खोजकर चलने का प्रयत्न करेंगे

पूसा, नई दिल्ली में दाजी का सम्मान करते केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर (बांये)

तो परम लक्ष्य की प्राप्ति के नजदीक तो पहुंच ही सकते हैं। श्री तोमर ने कहा कि श्री दाजी को हाल ही में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया है, और भी अनेक पुरस्कार उन्हें पूर्व में मिले हैं।

श्री तोमर ने कहा कि श्री दाजी के भीतर अध्यात्म व विज्ञान की छटा है, जिसे वे सबको बांटना चाह रहे हैं और इसमें सतत जुटे है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व कान्हा शांति वनम् के बीच भी एमओयू हुआ, जिसका फायदा सभी को मिल रहा है। श्री तोमर ने कहा कि कान्हा शांति वनम् में श्री दाजी के प्रयासों से 1400 एकड़ बंजर भूमि अब हरित आवरण ओढ़े हुए है, साथ ही वे श्रेष्ठ जल प्रबंधन करके पानी की एक-एक बूंद बचा रहे हैं। वहां लगभग 130 देशों से लोग आकर ध्यान करते हैं। एक समय में 1 लाख लोग ध्यान कर सकते हैं और एक बार में 50 हजार लोग रह सकते हैं।

कार्यक्रम में श्री दाजी ने कहा कि भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जो विश्व की आध्यात्मिक नींव को परिपूर्ण और निर्मित कर सकता है। अध्यात्म के बिना कोई भी देश जीवित नहीं रह सकता। हमारे ऋषियों ने अनुभव किया था कि कण-कण में देवत्व का वास है। उन्होंने कहा कि धर्म व अध्यात्म में बहुत बड़ा अंतर है। धर्म में हम ईश्वर को अपने हृदय से निकाल देते हैं, इसलिए लोग ध्यान नहीं करते क्योंकि उनका विवेक उन्हें चुभता है। ध्यान आईने के सामने खड़े हो जाने जैसा है, जिसमें व्यक्ति का स्पष्ट चित्र प्रदर्शित होता है।

श्री दाजी बोले- भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि हर कोई सुख चाहता है, लेकिन जिसके मन में शांति नहीं, वहां सुख कहां से मिलेगा, इसलिए ध्यान करें। ध्यान के माध्यम से पवित्रता द्वारा हमारे हृदय में सद्भाव लाना है। एक केंद्रित मन अखंडता लाएगा, ध्यान चमत्कार करता है लेकिन ज्यादातर लोग नहीं जानते कि यह क्या है। ध्यान के दौरान मन हमेशा विचारों में डूबा रहता है, जबकि ध्यान ईश्वर प्राप्ति के लिए होता है। ईश्वर प्राप्ति के लिए एक आंतरिक तलाश की जरूरत होती है। उन्होंने कहा कि कर्म सही हो तो आत्मा को स्वतः ही शांति मिलती है, वरना आत्मा हमें हताश कर देती है। वैज्ञानिक उपस्थित थे। ●

FOR HOME COACHING IN
JEE MAIN/ADVANCED, NEET &
LEADING ENGINEERING ENTRANCE EXAMS
MATHS
Mahesh Nautiyal
9810565754
Tutor with
vast experience

NANO TECHNOLOGY
NANO UREA & DAP

आत्मनिर्भर भारत, आत्मनिर्भर कृषि

सहकार से समृद्धि

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

इफको नैनो यूरिया एवं डी ए पी का वादा

लागत कम और लाभ ज्यादा

FCO अधिसूचित दुनिया का पहला नैनो उर्वरक

500 मिली बोतल मात्र ₹ 225/- में

500 मिली बोतल मात्र ₹ 600/-में

इफको नैनो यूरिया तरल

इफको नैनो डीएपी तरल

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

INDIAN FARMERS FERTILISER COOPERATIVE LIMITED
IFFCO Sadan, C-1 District Centre, Saket Place, New Delhi - 110017, INDIA
Phones: 91-11-26510001, 91-11-42592626. Website: www.iffco.coop

RNI Regd. No. DELHIN/2007/20953

Melini®
COMFORT WEAR

FA
SHI
ON

COLL
ECT
ION

VASU CREATION

Amar Vihar, Vill. Kakowal, Ludhiana, (Pb.)

www.melinindia.com

Customer Care No. 98141-62392 / 0161-4662392